R.N.I. No.: UTTHIN/2015/63078

डाक पंजीयन :- UA/DO/DDN/25/2021-2023

श्रमयोग पत्र

सेवा में

.....

.....

.....

.....

वर्ष : 09 अंक : 04 (हिन्दी मासिक) देहरादून, 01 जुलाई 2023 मूल्य - 5.00 ₹ प्रति पृष्ठ-8 वार्षिक मूल्य -100 ₹

मानव-वन्य जीव संघर्ष-जागरूकता जत्था

माँगो पर कार्यवाही न होने पर फिर प्रदर्शन

ग्रामीणों ने फिर भेजा मुख्यमंत्री को ज्ञापन

एसडीएम कार्यालय पर सभा करते ग्रामीण।

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

15 जून, मौलेखाल, सल्ट। उत्तराखंड में बढ़ते मानव वन्य जीव संघर्ष से उत्पन्न परिस्थितियों में सरकार द्वारा माँगों पर ध्यान न दिए जाने के विरोध में रचनात्मक महिला मंच ने ग्रामीणों के साथ एस0डी0एम0 कार्यालय पर प्रदर्शन कर सभा का आयोजन किया। सभा में महिलाओं व ग्रामीणों ने बड़ी संख्या में भागीदारी की।

इस अवसर पर बोलते हुए रचनात्मक महिला मंच की अध्यक्ष निर्मला देवी ने कहा की मांगों के बारे में मंच द्वारा ज्ञापन दिए हुए एक माह का समय बीत गया है लेकिन सरकार हमारी मांगों पर कोई ध्यान नहीं दे रही है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि मंच जंगली जानवर के हमले में हुई मौत का मुआवजा 25 लाख रूपये करने व जंगली जानवर के हमले में घायल हुए व्यक्ति के इलाज का पूरा खर्च सरकार के वहन करने की अपनी मांगों पर कायम है। यदि सरकार ने हमारी बात नहीं सुनी तो हम आंदोलन को तेज करेंगे। इस अवसर पर बोलते हुए मंच की कई सदस्याओं ने कहा कि सरकार को ग्रामीणों की मांगों पर तुरंत ध्यान देना चाहिए अन्यथा हम आंदोलन को तेज करने के लिए बाध्य होंगे। सदस्याओं ने कहा कि सरकार ने एक नाली जमीन पर फसल की बर्बादी का मुआवजा 400 रूपये तय किया है जो हास्यास्पद है। इसे तुरंत बढ़ाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा की यदि सरकार ने हमारी मांग नहीं मानी तो पूरे राज्य की महिलाएं आंदोलन करेंगी।

सभा में निर्णय लिया गया कि मानव-वन्यजीव संघर्ष जागरूकता जत्था को लेकर मंच अब राज्य भर में जायेगा और माँगो के समर्थन में पूरे राज्य में एक लाख हस्ताक्षर इकट्ठे किये जायेंगे। साथ ही साथ सल्ट क्षेत्र में जंगली जानवरों से मवेशियों व फसलो को होने वाले प्रत्येक नुकसान का मुआवजा वन विभाग से वसूला जायेगा।

इस अवसर पर रचनात्मक महिला मंच की अनेक गावों से पहुंची सदस्याओं, ग्रामीणों व श्रमयोग टीम से अजय कुमार, शंकर दत्त, रेनुका, दिव्या, उमा, अनीता, सुरेंद्र सिंह, राकेश, विक्रम, आसना, वन पंचायत थला के सरपंच प्रयाग सुन्द्रियाल, ग्राम प्रधान संगठन के विजय ध्यानी उपस्थित रहे।

15 जून को सौंपा गया ज्ञापन

रचनात्मक महिला मंच

हिनौला, मौलेखाल (सल्ट), पो0-देवायल, जिला-अल्मोड़ा- 244715

15-06-2023

सेवा में,

माननीय मुख्यमंत्री जी

उत्तराखण्ड

विषय: हमारे मांग पत्र का संज्ञान न लेने पर आपको पुन: याद दिलाने के सम्बन्ध में ।

महोदय,

आप अवगत ही हैं कि उत्तराखण्ड राज्य में मानव-वन्यजीव संघर्ष निरन्तर बढ़ रहा है। इस संघर्ष की वजह से हमारी जान, कृषि व पशुपालन भारी संकट में है। सल्ट में हाल ही के महीनों में एक महिला बाघ के हमले में घायल हुई व 2 महिलाओं की मौत हुई।

हम सभी ग्रामीण बहुत परेशान हैं। इस सम्बन्ध में पिछले (मई) माह की 10 तारीख को उप-जिलाधिकारी सल्ट के माध्यम से हमने आपको एक माँग पत्र भेजा था परन्तु बहुत दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि उस पर अब तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है।

हम इस पत्र के माध्यम से पुन: आपके पास अपना माँग पत्र भेज रहे हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप हमारी माँगो पर गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे।

धन्यवाद।

निवेदनकर्ता

रचनात्मक महिला मंच

माँग पत्र संलग्न।

श्रमयोग पत्र के 100वें अंक

के प्रकाशन के अवसर पर श्रमयोग पत्र परिवार के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई।

-सम्पादक

हमारी पाती

प्रिय साथियो,

श्रमयोग पत्र का 100वां अंक लेकर हम आपके बीच हैं। 100वां अंक लेकर आपके बीच आना हमारे लिए भावुक क्षण है। अब से 11 वर्ष पूर्व से जब श्रमयोग के कार्यक्षेत्र में काम करते हुए हम देख रहे थे कि सामुदायिक मुद्दे अखबारों के किसी भी पृष्ठ पर जगह नहीं पाते तब हम गैर पत्रकारों के समूह ने एक सामुदायिक समाचार पत्र का सपना देखा था। हम देख रहे थे कि अखबारों में तमाम तरह के पृष्ठ जैसे राज्य की खबर, जिले की खबर, फिल्मों की खबर, खेल-कूद पृष्ठ, देश-विदेश की खबर तो होते हैं पर सामुदायिक खबरों का कोई पृष्ठ नहीं होता। ग्रामीण जीवन को अखबारों में अभिव्यक्ति की कोई जगह नहीं है। अत: एक सामुदायिक समाचार पत्र का होना जरुरी लगने लगा। 1 अप्रैल 2015 को श्रमयोग पत्र के पहले अंक के प्रकाशन ने उस सपने को वास्तविकता में बदला।

तब से लेकर अब तक यह यात्रा अनवरत जारी है। इन सौ महीनों में हमने टूटा-फूटा, कच्चा-पक्का सब तरह से लिखा है, बस मूल्यों के साथ समझौता नहीं किया। समुदायों में आपसी प्रेम-सहिष्णुता व स्वावलम्बन हो, इस विचार को ध्यान में रखकर खबरें लिखी। पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ करते समय हमने तय किया था कि विशेषकर अपने कार्यक्षेत्र में किसी किसान, महिला व बच्चे की आवाज को दबने नहीं देंगे, उस पर हम कायम हैं। जब किसी महिला किसान ने लिखा की गांव में जुताई के लिए बैल नहीं हैं तो वो हमारे लिए मुख्य खबर रही। बच्चों ने लिखा कि विद्यालय में शौचालय नहीं है तो न सिर्फवह श्रमयोग पत्र में महत्त्वपूर्ण खबर बानी बल्कि उसके लिए शिक्षा विभाग के साथ पत्राचार भी हुआ। ऐसे अनेक उदाहरणों से हमारी सौ महीने की यात्रा भरी पड़ी है।

पत्र की सफलता व असफलता को आंकने का कार्य तो पाठको का है, परन्तु बहुत सहजता से हम यह कहना चाहते है कि पर्वतीय उत्तराखण्ड के गाँवों में रहने वाले बच्चे व महिलायें, जिनकी जिन्दगी में अखवार पहले कभी शामिल नहीं रहे अब वे श्रमयोग पत्र के पत्रकार हैं और निरन्तर पत्र में लिख रहे हैं। पत्र के माध्यम से विशेषकर महिलाओं की न सुनी जा सकने वाली आवाज अब मुखरता से लोगों के बीच आ रही है। श्रमयोग पत्र ने उन्हें उन मुद्दों को समाज के बीच लाने का मंच दिया है, जो अन्यथा पानी के स्रोतों में पानी भरते हुए, जंगलों में घास काटते हुए या खेतों में फसलो को गोढ़ते हुए ही खत्म हो जाते। पत्र को निकालने में निरन्तरता कायम करना दृढ इच्छा शक्ति का काम है। पत्र मे लिखने वाले हमारे साथियों की दृढ इच्छा शक्ति का कमाल ही है कि श्रमयोग पत्र बिना रूके पिछले सौ माहों निरन्तर निकल रहा है और सामुदायिक पत्रकारिता की मुहीम को मजबूत कर रहा है।

साथियो, श्रमयोग पत्र के माध्यम से सामुदायिक पत्रकारिता आन्दोलन को मजबूत करने की जिम्मेदारी हम सबके ऊपर है। अब तक आपसे मिले हर तरह के सहयोग के लिये आभार।

जिन्दाबाद!

भीतर के पृष्ठों में

- गांव घर की खबर – पृष्ठ 2
- ढाई आखर – पृष्ठ 3
- कहानी–मेरे संग की औरतें–1 – पृष्ठ 4
- डिमेंशिया भाग–1 – पृष्ठ 5
- कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट – पृष्ठ 6
- समर कैंप–दोस्तों संग मौज मस्ती – पृष्ठ 8

मौसम का हाल

मौसम विभाग के अनुसार उत्तराखण्ड राज्य में 1–29 जून तक कुल 134 मीमी वर्षा रिकॉर्ड की गई जो सामान्य (168.2 मीमी) से कम है। मानसून आ चुका है जुलाई में अच्छी बारिश होने का अनुमान है।

जुलाई माह-सावधानियाँ

जंगली जानवरों से सतर्क रहें। पशुओं के लिये घास लेने समूहों में ही जायें। वर्षाकाल में गाँवों के रास्तों के आस–पास झाड़ियों का कटान करें ताकि जानवरों को छिपने की जगह न मिले। बाखलियों में रात्रि में पर्याप्त प्रकाश करें। बाहर से घर वापस लौटने पर हाथों को साबुन से धोयें।

जुलाई माह में विशेष दिवस

01 जुलाई	–	चिकित्सक दिवस
11 जुलाई	–	विश्व जनसंख्या दिवस
12 जुलाई	–	पेपर बैग दिवस
15 जुलाई	–	रचनात्मक महिला मंच बैठक
17 जुलाई	–	लोक पर्व हरेला
29 जुलाई	–	अन्तर्राष्ट्रीय बाघ दिवस
30 जुलाई	–	टीम श्रमयोग बैठक

सम्पादकीय

माँगो पर फिर प्रदर्शन

पिछले एक-दो दशकों से उत्तराखंड में मानव वन्यजीव संघर्ष तेजी से बढ़ा है। 15 जून को पिछले माह दिए ज्ञापन की याद दिलाने के लिए सल्ट तहसील में ग्रामीणों ने जोरदार प्रदर्शन किया। सल्ट विकास खंड में महिलाओं का संगठन रचनात्मक महिला मंच व ग्रामीण सरकार से जंगली जानवरों के हमले से मौत व अन्य नुकासान का मुआवजा बढ़ाने की मांग कर रहे हैं। उनका कहना है कि जंगली जानवर के हमले से मनुष्य की मौत का मुआवजा रू0 25 लाख होना चाहिये। वर्तमान में उत्तराखंड में यह रकम महज 4 लाख रुपये है। जबकि ओड़िशा में यह 6 लाख, मध्य प्रदेश में 8 लाख, कर्नाटक में 15 लाख व महाराष्ट्र में 20 लाख (10 लाख नकद व 10 लाख एफ0डी0) है। संगठनों की यह भी मांग है कि जंगली जानवरों के हमले में घायल हुए व्यक्ति के इलाज का पूरा खर्च सरकार वहन करे। जंगली जानवरों के हमले में घायल अनेक ग्रामीणों के परिजन कहते हैं कि इलाज के दौरान वो भारी कर्ज में फंस गए हैं।

संगठन व ग्रामीण यह भी मांग कर रहे हैं कि जंगली जानवरों के हमले में मरने वाले खच्चर, गाय व बकरी के लिये मुआवजा बढ़ाया जाये। बकरी, गाय व खच्चर पर्वतीय समाज में आजीविका के महत्वपूर्ण श्रोत हैं। उनके मरने से परिवार आर्थिक रूप से संकट में आ जाते हैं। अभी जंगली जानवरों के हमले से होने वाली इनकी मौत का मुआवजा बहुत कम व अव्यवाहरिक है। मांग है की कम से कम इतना मुआवजा मिले की नया पशु खरीदा जा सके।

वर्तमान में जंगली जानवरों से फसल को होने वाले नुकसान का मुआवजा भी काफी कम है और इसे प्राप्त करना भी आसान नहीं है। गन्ना, धान व गेहूँ की फसल को छोड़ कर अन्य फसलों के लिए यह रूपये 8 हजार प्रति एकड़ है। यदि सल्ट विकास खंड के सन्दर्भ में देखें तो कई परिवार 4-5 नाली भूमि में मिर्च की खेती करते हैं और उससे 35-40 हजार रूपये कमा लेते हैं। यही वहां की मुख्य फसल है, जिस आमदनी का इंतजार परिवार वर्ष भर करता है। 8 हजार रूपये प्रति एकड़ मुआवजे की गणना से यह 400 रूपये प्रति नाली है। मुआवजे की यह दर किसी भी फसल के लिए हास्यापद है। ऐसे में फसलों को होने वाले नुकसान का मुआवजा बढ़ाने की मांग जायज ही है।

कुल मिला कर मानव-वन्यजीव संघर्ष ने उत्तराखंड के अनेक इलाकों में जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। इन परिस्थितियों से निपटने में सरकार के कोई विशेष प्रयास अभी तक नजर नहीं आ रहे हैं। सरकार को तुरन्त इस दिशा में सोचना चाहिए। वन विभाग को ज्यादा संवेदनशील होने की जरूरत है। जानवरों और इंसानों के बीच बढ़ते टकराव से निपटने के लिए जरूरी है की वन विभाग समुदायों के साथ टकराव की जगह संवाद बढ़ाये। सरकार के लिए भी ये जरूरी है की वह ग्रामीणों के बीच विश्वास बहाल करने के लिए मुआवजा राशि बढ़ाये।

पाठकों के लिए

श्रमयोग पत्र में अपने प्रिय पाठकों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये **'गांव घर की खबर'** नाम से स्तम्भ प्रकाशित किया जाता है। आप समाज, देश, गांव, खेती, राजनीति, मानव मूल्य आदि किसी भी विषय पर अपनी बेबाक राय हमें भेजें। हमें इसे प्रकाशित करने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे। विचार कभी भी दबाए नहीं जाने चाहिये, इन्हें शब्द रूप दें।

-सम्पादक

श्रमयोग समुदाय की सदस्यता ग्रहण करें।

साथियों श्रमयोग आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही गतिविधियों का संचालन करता है। हम किसी भी सरकारी या गैर सरकारी संस्थान से किसी तरह की आर्थिक मदद प्राप्त नही करते है। अत: अपने अन्य साथियों को भी श्रमयोग समुदाय की सदस्यता लेने हेतु प्रेरित करें। सदस्यता शुल्क रू0 200/- वार्षिक है। प्रत्येक सदस्य तक ''श्रमयोग पत्र'' डाक द्वारा निशुल्क भेजा जायेगा। सदस्यता आवेदन पत्र के लिये आप shramyogcommunity@gmail.com पर पत्र भेज सकते है। श्रमयोग की गतिविधियों को जानने के लिये www.shramyog.org को देखें।

गांव घर की खबर

हमारी कई बहनें मजबूरी में पलायन कर रही हैं

निर्मला देवी, अध्यक्षा
रचनात्मक महिला मंच

साथियों नमस्कार!

आशा करती हूँ आप अपने घर परिवार के साथ कुशल होगें। जून की बैठकें अच्छे से हो गई हैं।

हमारी क्लस्टर इंचार्ज बहन आसना जब समूह की बैठकें करने आती हैं तो हम सब बहनों को कई नई बातों से अवगत कराती हैं, साथ ही साथ अपनी हक की लड़ाई को स्वयं लड़ने की भी प्रेरणा देती हैं।

साथियों हमारे समूह से कई बहनें पलायन कर रही हैं, किसी को अकेलेपन से घर छोड़ना पड़ रहा है, तो किसी के स्वास्थ की दिक्कत है। उजाला स्वयं सहायता समूह की सदस्या कौशल्या देवी के पति का अचानक देहांत हो गया, वे दोनों ही घर पर रहते थे, उनके बच्चे दिल्ली में रहते हैं, अब हमारी बहन कौशल्या दीदी को मजबूरन घर छोड़ना पड़ रहा है। उस बाखली में पहले 12-13 परिवार थे, अब इन घरों में से केवल दो परिवार घर में हैं, ऐसा देख कर बड़ा दुख होता हैं। सबसे बड़ा तो यहां पर बाघ का खतरा है, बाघ हर गाँव में दिख रहा है। उनकी भी जनसंख्या बढ़ रही है, लोग गाँव छोड़ने को मजबूर हो रहे हैं।

साथियों रचनात्मक महिला मंच अपनी पांच मांगों से पीछे नहीं हटेगा। जब तक हमारी मांगे पूरी नहीं होती तब तक हमें माननीय मुख्यमंत्री जी को मांगपत्र देते रहना है। अपनी आवाज सरकार तक पहुंचानी है। हमें संगठन में व अपने ताकत के साथ हर महीने तहसील में ज्ञापन देने जाना होगा। अपनी मांगों को लेकर सरकार तक बात पहुंचानी होगी। मैं अपनी बहनों से यही कहूँगी कि हमें बाघों के कारण अपना घर गाँव नहीं छोड़ना है। जो लोग घर में रोजगार करते हैं वे लोग घर छोड़कर कैसे जा सकते है। जिनकी गाय, भैंस हैं वो मिलकर जंगल के लिए जाए। जंगलो में अकेले न जाएं। अपने बच्चो का ध्यान दें। बंदर, सुअर की की शिकायतें तो हमारी हर रोज की हैं, तब भी हम अपनी खेती कर रहे हैं, लेकिन बाघ ने लोगों को डरा दिया है। हर रात को एक डर का माहौल हो जाता है, मेरे बेटे ने भी जब से बाहर बाघ देखा है तब से थोडा डरा हुआ है। जिनका घर अकेले में है उनके लिए भय ज्यादा बना हुआ है।

गढ़वाल क्षेत्र में भी बाघ ने आतंक मचा रखा है

ममता देवी
रामी बौराणी समूह, सतखोलू

सभी भाई बहनों को नमस्कार! आप अपने परिवार के साथ कुशल-मंगल होंगें।

मैं ममता देवी रामी बौराणी स्वयं सहायता समूह की सदस्या हूँ। मैं आप को अपने गाँव के बारे में बताना चाहती हूँ। मेरे गाँव में खेती-बाड़ी कुछ भी नहीं हो रही है। जो थोड़ा बहुत हम लगाते भी हैं उसे जंगली जानवर नहीं छोड़ते। इस वजह से हम ज्यादा जगह में खेती नहीं कर पा रहे हैं। सुअर, बंदर, खरगोश व अन्य जानवर खेती को नुकसान पहुंचा रहे हैं। करें तो क्या करें। गाँव में बाघ का खतरा भी बना हुआ है, लोगों को घर से बाहर निकलने में भी अब डर लगता है। गढ़वाल क्षेत्र में भी बाघ ने बहुत आतंक मचा रखा है। कभी किसी की तो कभी किसी की गाय, बैल, बकरी व बछड़े को शिकार बना रहा है।

हमने मंच के ग्रुप और श्रमयोग पत्र में कुमाऊ में चल रहें जत्थे कार्यक्रम को देखा, उसमें जानवरों और इंसानों की मांगों को सुना। ये कार्यक्रम बहुत अच्छा था, कुमाऊँ की बहनें अपनी मांगो को लेकर एस0डी0एम0 के पास भी गईं। हम इन मांगों का पूरा समर्थन करते हैं। सरकार से यही गुजारिश है कि हमारी मांगों पर ध्यान दें। हमारी मांगो का उत्तर भी दे। हम माँग करते हैं कि जंगली जानवरों के हमले में मनुष्य की मौत का मुआवजा 25 लाख किया जाए। जंगली जानवरों के हमले में घायल होने वाले व्यक्ति के इलाज का पूरा खर्च सरकार दे। जंगली जानवरों के हमले में मरने वाले खच्चर के लिए मुआवजा 1 लाख, गाय के लिए 50 हजार, बकरी के लिए 20 हजार रूपए हो। जंगली जानवरों द्वारा फसलों को होने वाले नुकसान का मुआवजा बढाया जाय, और मुआवजे को प्राप्त करने की प्रक्रिया को आसान किया जाय। सरकार पलायन को रोकने के लिए भी काम करे। हमारे बच्चे स्कूल जाते समय बहुत ज्यादा डरते हैं, बाघ की वजह से बड़े बच्चे भी स्कूल जाने में डरतें हैं। उनके लिए भी विभाग को कोई व्यवस्था करनी चाहिए।

गाँव में लम्पी वायरस फैला हुआ है

श्यामा देवी व हेमा देवी
सतखोलू

आप सभी भाई बहनों को हमारा नमस्कार! आजकल गर्मियों का मौसम है, गाँव में पानी की बहुत परेशानी हो रही है। 15 तारीख को रचनात्मक महिला मंच सल्ट तहसील में एस0डी0एम0 के माध्यम से मुख्यमंत्री को अपनी मांगो को पुन: याद दिलाने पहुँचा। मई माह में भी कुमाऊँ की बहनें अपनी मांगो को लेकर तहसील गई थी। हम कुछ महिलाएं कुमाऊं की बहनों का साथ देने आने के लिए तैयार थी, पर गाड़ी की व्यवस्था नहीं हो पाई, इसलिए हम नहीं जा पाए। हम सभी गढ़वाल की बहनें आप सभी कुमाऊँ की बहनों के साथ पूरे समर्थन में खड़े हैं। बाघ का आतंक दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, अकेले कहीं भी जाना मुश्किल हो रहा है। जंगली जानवरों के हमले में मरने वालों को 25 लाख रुपए का मुआवजा दिया जाय और घायल व्यक्ति के पूरे इलाज का खर्च सरकार उठाये, इस बात से हम भी सहमत हैं। हम पांचों मांगों के समर्थन में हैं। हमें तो मुआवजा मिलता ही नहीं है, विभाग वाले बोलते हैं कि आप कोर्बेट जोन में नहीं आते हो।

आजकल गांव में बहुत सी गाय बीमार हैं। गाँव में लम्पी वायरस फैला हुआ है, ऐसे में क्या करना है कुछ पता नहीं चल पा रहा है। हमने डॉक्टर को भी बुलाया व गायों को टीका भी लगाया। आजकल हम सभी समूह की बहनों ने पॉलीहाउस में महोत्सव से मिले बीज जैसे भिंडी, खीरा, शिमला मिर्च, टमाटर लगा रखा है। कुछ बीज जो कुमाऊँ के बीज बैंक से मिला था उसे हमने बौ दिया था, जिसमें आजकल बहुत भिंडी हो रही है। हम सब बहने पॉलीहाउस से मिल बांट कर इसे लाते हैं और फिर खाते हैं। महोत्सव में मिले बरसाती बीज को हमने अभी नहीं बोया है, अब जब बारिश होगी तो कुछ दिन बाद उसे भी बोया जाएगा।

पहाड़ों में हुई भयंकर गर्मी

अनीता, प्रशिक्षु, श्रमयोग

मई तक तो पता ही नहीं चला कि गर्मी का मौसम है, क्योंकि पहाड़ों में बारिश होने से मौसम बहुत ही सुहाना था। पर अब देखो जून के महीने में न बारिश, और न आसमान में बादल। धूप इतनी है कि घर से बाहर जाने का मन तक नहीं कर रहा। शहर से गांव में आए लोग भी गर्मी से परेशान हो रहे हैं। धूप ज्यादा होने के कारण लोगों की खेतों में मिर्च सूख गई है और मंडवा भी जमीन से ऊपर नहीं आ रहा। अगर बारिश हो तो थोड़ा राहत मिले। घास की जड़े भी सूख चुकी हैं, जानवरों के लिए चारा भी लाएं तो कहां से। जंगलों में लोगों ने आग लगा दी है, जो बचा घास रहता भी वह जल चुका है। अब चारों तरफ जंगल काले-काले हुए पड़े हैं। पहाड़ों में तो आग लगाना सीजन के जैसा हो गया है, गर्मी शुरू और लोगों का जंगलों में आग लगाना भी शुरू।

इस महीने में पानी की भी बहुत समस्या हो रही है, गाय-भैंसों के लिए पानी दूर से लाना पड़ता है। बिजली सिर्फ रात को ही पूरी आ रही है, दिन भर में बिजली कभी रहती है कभी नहीं और कभी तो बिल्कुल नहीं। जंगलों में लगी आग को देखकर बहुत ही निराशा होती है। मैं अपने लेख के जरिए सबको कहना चाहूंगी- कृपया आग न लगाएं और अपने आसपास के लोगों को भी यह बात बताएं। जून के महीने में खुशी के पल बहुत रहे। इस महीने शहरों में रहने वाले लोग पहाड़ों की ठंडी हवा खाने अपने-अपने घर पहुंचे। उनको देखकर लगा कि लोगों को अपने पहाड़ों से और घरों से प्यार है। लोग रहना तो चाहते हैं अपने घरों में, परंतु जंगली जानवर के डर, अच्छी शिक्षा और रोजगार के खातिर उनको बाहर शहर में रहना पड़ता है।

जीवन में प्रकृति का महत्व

उमा, प्रशिक्षु, श्रमयोग

हम जब से इस संसार में आये हैं, हमे सांस लेने के लिए स्वच्छ वायु प्रकृति ही प्रदान करती है, हम बिना प्रकृति की सहायता के एक कदम भी नहीं चल सकतें हैं। प्रकृति का साथ छोड़ देने से मनुष्य संसार ही छोड़ देता है। बात यहीं खत्म नहीं होती है मनुष्य के संसार छोडने के बाद भी प्रकृति की सहायता से ही उसके शरीर को जलाया या फिर मिट्टी में दफनाया जाता है। ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ प्रकृति हमारा साथ नहीं देती, वो पल-पल हमारे साथ है लेकिन हम दोनों में अंतर सिर्फ इतना है की वो तो हमारा साथ देती है परन्तु हम उसका साथ नहीं दे पाते हैं। वो हमारे लिए एक रहस्यमयी साथी है, जिसका साथ बेहद जरुरी है, लेकिन हम अपने मतलब के लिए हर समय प्रकृति को दु:ख पहुंचाते हैं। प्रकृति हमारे जीवन जीने का आधार है और हम सब इस प्रकृति का एक हिस्सा हैं।

आजकल गर्मियों में वर्षा न होने के कारण घास अंकुरित नहीं हुई तो हम लोग सोचते हैं कि जंगलों में आग लगा देनी चाहिए। आजकल हर रोज जंगलों में कहीं न कहीं आग लगी होती है, ऐसा बिल्कुल नहीं होना चाहिए। हम जितना प्रकृति को नुकसान पहुंचाएंगे, उतना हमें ही नुकसान होगा। प्रकृति को समृद्ध रखेंगे तो हम स्वस्थ रहेंगे।

ढाई आखर.....
टमाटर और सेब

✍बिजू नेगी

इस हफ्ते, खेती-किसानी, खान-पान से जुड़ी, दो खबरों ने ध्यान खींचा- एक खबर टमाटर की बढ़ी कीमतो से जुड़ी थी और दूसरी खबर, सेब को लेकर थी जिसमें आयातित विदेशी सेबों पर से सरकार द्वारा आयात शुल्क कम किए जाने की घोषणा को लेकर हिमाचल प्रदेश के सेब उत्पादकों द्वारा विरोध किया जा रहा था।

अगर देखें तो दोनों खबरों की जड़ें एक ही हैं और वह यह कि खेती-किसानी, खेती-किसानी न रहकर मात्र कृषि रह गयी है, जिसकी बागडोर किसान या समाज के हाथ में न रहकर, बाजार के हाथ में चली गयी है और अब लगभग पूरी तरह बाजार द्वारा ही निर्धारित व संचालित हो रही है, जिससे किसान की कमाई तो लागत से भी घटतर होती जा रही है। ऐसे में, कंपनी या व्यापारी, किसान के उसी उत्पाद से मालामाल हो रहे हैं, और किसान जिन्होंने उस फसल को उगाने में दिन-रात एक किया, वे बस अपना हाथ मलते रह जाते हैं। यह स्थिति अब स्थाई हो चुकी है और इस तरह की समस्या या खबरें अब हर फसल मौसम में देखने-सुनने-पढ़ने में आ जाती हैं।

इन दिनों देहरादून की ही सब्जी मण्डियों में, टमाटर रु 80 व अधिक प्रति किलो बिक रहा है-दिल्ली में शायद रु 100 प्रति किलो। पिछले ही महीने, उपभोक्ता टमाटर रु 30-40 प्रति किलो खरीद रहे थे, तो एकाएक उसकी खुदरा कीमत में इतना उछाल कैसे? एक कारण तो यह बताया गया, जो गलत भी नही है, कि पिछले महीने तक टमाटर स्थानीय किसानों के खेतों में उग रहे थे और वहीं से मंडी आ रहे थे। फिर जून आते-आते और गर्मी के अपने चरम पर पहुंचते, खेतों में उसकी फसल खत्म हो गयी। यह उसका स्वाभाविक फसल चक्र है और क्योंकि बाजार में अब टमाटर कम है और खरीदार ज्यादा, इसलिए उसके दाम में यह उछाल आया है। फिर यह भी बताया जाता है कि मंडी में जो टमाटर आ रहा है वह किसी दूसरे राज्य, कहीं दूर से आ रहा है सो लिहाजा वाहन व ढुलाई का खर्चा भी अतिरिक्त हो गया है।

लेकिन सब इतना ही नहीं है। और बड़ी वजह यह है कि थोक कंपनियों, खरीदारों/व्यापारियों ने जब टमाटर खेतों में अभी लगाया ही गया था या उग ही रहा था, तभी उसका सौदा कर लिया था (जिसे ''फ्यूचर ट्रेडिंग'' कहते हैं या अग्रिम व्यापार भी कह सकते हैं) या पिछले दो-तीन महीनों में जब टमाटर खेतों में भरपूर था, दाम भी कम थे, तो उसे जितना ज्यादा हो सका, खरीद लिया। खरीद कर वह टमाटर बाजार में उतारा नहीं गया बल्कि सीधा शीत-भण्डारों में रख दिया गया ताकि अब, जब उसका मौसम खत्म हो गया, उसे बाजार में निकाल कर मनचाहा मुनाफा कमाया जाए। यह बाकायदा विक्रय रणनीति के तहत किया जाता है। और कई बार तो व्यापारियों द्वारा बाजार में कृत्रिम अभाव की स्थिति पैदाकर, उत्पादों के दाम आसमान चढ़ा दिए जाते हैं।

हम बाजार द्वारा नियंत्रित इस रणनीति को इस तरह भी देख सकते हैं- शहरों में ही फसल के मुनाफे का स्वप्न या लालच दिखा कर पहले किसानों से जरूरत से ज्यादा फसल लगवायी जाती है- फिर उसका जरूरत से ज्यादा उत्पादन होने पर, उत्पादन के आधिक्य के कारण या दाम में कृत्रिम गिरावट से किसान को अपनी फसल सस्ते में बेचने को मजबूर कर दिया जाता है।

तो हम वापस उसी बात पर लौटते हैं कि जब खेती-किसानी का वास्ता किसान समाज से नहीं बल्कि बाजार से होगा, तब इसी तरह की परिस्थितियां पैदा होंगी जिसमें किसान और कुछ हद तक अन्तिम उपभोक्ता भी इस तरह की त्रासदी का षिकार होगा। आए दिन हम किसानों द्वारा फल, सब्जियां और यहां तक की दूध भी मण्डी में बेचने के बजाय सड़कों पर उड़ेल देने की खबरें पढ़ते ही हैं।

सेब के किस्से में, हम जानते हैं कि काश्मीर व हिमाचल प्रदेश के सेबों ने देश में ही नही, विदेश में भी अपनी पैठ बनायी है। इधर कुछ सालों से, विश्व व्यापार संघ के समझौतों के तहत विदेशों से, खासकर अमरीका व ऑस्ट्रेलिया से सेब आयातित किया जा रहा है। उन सेबों में स्वास्थ व बीमारियों को लेकर बहुत सारी चिंताएं है, जिन पर कुछ चर्चाएं हुई है मगर बाजारी प्रतिस्पर्धा और विदेशी चीजों के प्रति हमारी कमजोरी की वजह से उन सेबों का यहां अच्छा बाजार विकसित हुआ है जिसका दुश्प्रभाव स्थानीय सेब उत्पादकों की आर्थिकी पर पड़ा है। अपने किसानों का हित देखते हुए, विदेशी सेबों पर आयात शुल्क लगाया जाता है जो पहले 50 प्रतिशत था और 2018 में बढ़ा कर 70 प्रतिषत कर दिया गया था।

मगर अब, विश्व व्यापार संघ के दबाव या अन्य कारणों से एकाएक सरकार द्वारा यह आयात शुल्क, और वह भी ऐन फसल आने के समय, कम करने की घोषणा की गयी है। ऐसे में, स्थानीय किसान कंपनियों व व्यापारियों को, ''न घर के-न घाट के'' की स्थिति में अपनी पकी फसल को कम से कम दामों में बेचने को मजबूर होंगें।

बहुत जरूरी है कि खेती किसानी-समाज-बाजार, इस पूरे त्रिकोण को गहराई से समझने की कोशिश की जाए। आप सब खुद भी अपने से ये सवाल कर, परस्पर चर्चा करें।

मंच की कलस्टर इकाईयों का गठन जारी

चुनाव के बाद शपथ लेते जसपुर ईकाई के पदाधिकारी।

कलस्टर इकाई	अध्यक्ष	सचिव	कार्यकारिणी सदस्य
गिंगड	बीना देवी	गंगा देवी	संतोषी देवी, शोभा देवी, मंजू देवी
जसपुर	शान्ति देवी	मंजू देवी	पुष्पा देवी, अनीता देवी, चन्द्रा देवी
झीमार	जानकी देवी	भवानी देवी	भगवती देवी, देवकी देवी, सरोज भट्ट

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

मार्च माह में हुए श्रमयोग के मंथन में यह बात निकलकर आई थी कि रचनात्मक महिला मंच के प्रभावपूर्ण संचालन के लिये कलस्टर स्तर पर भी रचनात्मक महिला मंच की इकाई को गठित किया जाना चाहिए। उसके बाद इस बात को 31 मार्च को रचनात्मक महिला मंच की त्रैमासिक बैठक में रखा गया। मंच ने इस प्रस्ताव पर पूर्ण सहमति जताते हुए कहा कि यह वास्तव में एक बहुत अच्छा कदम होगा। इससे हमारे स्वयं सहायता समूह क्षेत्रीय स्तर पर भी मजबूत रहेंगे। क्योंकि हमारा मंच अब इतना बड़ा हो गया है कि हर 3 महीने में एक जगह पर एकत्र होने में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। कलस्टर स्तर पर मंच की इकाइयाँ गठित होने से संवाद करना आसान होगा और निर्णय की प्रक्रिया में सबकी सहभागिता बढ़ेगी।

इस निर्णय के तहत कलस्टर इकाइयों के गठन का काम लगातार चल रहा है। मई माह में थला व घचकोट कलस्टर इकाई का गठन किया गया था। इस क्रम में जून माह में गिंगड़े, जसपुर व झीमार इकाई का गठन किया गया। निम्न पदाधिकारी चुने गये।

इस दौरान क्लस्टर ईकाईयों के गठन के उद्देश्य पर विस्तार से चर्चा की गई। रचनात्मक महिला मंच को मजबूत संगठन बनाना, तीनों अभियानों- 'सामाजिक पूँजी बढाओ अभियान, श्रम-जन स्वराज अभियान व प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियानों को ज्यादा प्रभावपूर्ण बनाना, व अभियानों के द्वारा क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक व पर्यावरणीय विकास हेतु निरंतर कार्य करना क्लस्टर ईकाईयों के गठन का उद्देश्य होगा। श्रम-उत्पाद, श्रम बाजार व बीज कोष के माध्यम से मंच की प्रत्येक सदस्या की आर्थिक उन्नति व पोषण के लिये कार्य करना, सल्ट विकास खण्ड में मंच की प्रत्येक सदस्या के परिवार लिये गुणवत्ता युक्त जीवन हेतु कार्य करना, मंच के सभी सदस्यों व ग्रामीणों में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता पैदा करना, सरकार के विभिन्न विभागों व अन्य संस्थानों के सहयोग से विकासात्मक गतिविधियों का संचालन करना, श्रभयोग पत्र के माध्यम से सामुदायिक पत्रकारिता को मजबूत करना व अपनी जरूरतों व अधिकारों के लिये संघर्ष करना कलस्टर इकाईयों का मुख्य कार्य होगा।

पहाड़ी दीदी की ओर से

श्रमयोग पत्र के 100वें अंक
के प्रकाशन के अवसर पर
श्रमयोग पत्र परिवार के सभी सदस्यों
को अनेकानेक हार्दिक शुभकामनायें

श्रमयोग पत्र के 100वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर श्रमयोग पत्र परिवार के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई।

देवी दत्त शर्मा
अध्यक्ष
श्री धर्म सेवा सोसायटी, चाँच
सल्ट, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड।

शिक्षा, साहित्य व संस्कृति

'मेरे संग की औरतें' मृदुला गर्ग द्वारा रचित संस्मरण है। इसमें लेखिका ने अपनी चार पीढ़ी की महिलाओं की जिन्दगी के अलग-अलग पहलुओं का वर्णन किया है। दो किश्तो मे प्रकाशित होने वाली कहानी की पहली किश्त प्रस्तुत है।

मेरे संग की औरतें

मेरी एक नानी थीं। जाहिर है। पर मैंने उन्हें कभी देखा नहीं। मेरी माँ की शादी होने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई थी। शायद नानी से कहानी न सुन पाने के कारण बाद में, हम तीन बहिनों को खुद कहानियाँ कहनी पड़ीं। नानी से कहानी भले न सुनी हो, नानी की कहानी जारूर सुनी और बहुत बाद में जाकर उसका असली मर्म समझ में आया। पहले इतना ही जाना कि मेरी नानी, पारंपरिक, अनपढ़, परदानशीं औरत थीं, जिनवेफपति शादी के तुरंत बाद उन्हें छोड़कर बैरिस्ट्री पढ़ने विलायत चले गये थे। कैंब्रिज विश्वविद्यालय से डिग्री लेकर जब वे लौटे और विलायती रीति-रिवाज के संग जिदगी बसर करने लगे तो, नानी के अपने रहन-सहन पर, उसका कोई असर नहीं पड़ा, न उन्होंने अपनी किसी इच्छा-आकांशा या पसंद-नापंसद का इजहार पति पर कभी किया।

पर जब कम-उम्र में नानी ने खुद को मौत के करीब पाया तो, पंद्रह वर्षीय इकलौती बेटी 'मेरी माँ' की शादी की फिक्र ने इतना डराया कि वे एकदम मुँहजोर हो उठीं। नाना से उन्होंने कहा कि वे परदे का लिहाज छोड़कर उनके दोस्त स्वतंत्रता-सेनानी प्यारेलाल शर्मा से मिलना चाहती हैं। सब दंग-हैरान रह गये। जिस परदानशीं औरत ने पराए मर्द से क्या, खुद अपने मर्द से मुँह खोलकर बात नहीं की थी, आखिरी वक्त में अजनबी से क्या कहना चाह सकती है? पर नाना ने वक्त की कमी और मौके की नजाकत की लाज रखी! सवाल-जवाब में वक्त बरबाद करने के बजाय फौरन जाकर दोस्त को लिवा लाए और बीबी के हुजूर में पेश कर दिया।

अब जो नानी ने कहा, वह और भी हैरतअंगेज था। उन्होंने कहा, वचन दीजिए कि मेरी लड़की के लिए वर आप तय करंगे। मेरे पति तो साहब हैं और मैं नहीं चाहती मेरी बेटी की शादी, साहबों के फरमाबरदार से हो। आप अपनी तरह आजादी का सिपाही ढूँढ़कर उसकी शादी करवा दीजिएगा। कौन कह सकता था कि अपनी आजादी से पूरी तरह बेखबर उस औरत के मन में देश की आजादी के लिए ऐसा जुनून होगा। बाद में मेरी समझ में आया कि दरअसल वे निजी जीवन में भी काफी आजाद-खयाल रही होंगी। ठीक है, उन्होंने नाना की जिंदगी में कोई दखल नहीं दिया, न उसमें साझेदारी की, पर अपनी ख़ज़िंदगी को अपने ढंग से जीती जरूर रहीं। पारंपरिक, घरेलू, उबाउ और खामोश जिंदगी जीने में, आज के हिसाब से, क्रांतिकारी चाहे कुछ न रहा हो दूसरे की तरह जीने के लिए मजबूर न होने में असली आजादी कुछ ज्यादा ही थी।

खैर, इस तरह मेरी माँ की शादी ऐसे पढे-लिखे होनहार लड़के से हुई, जिसे आजादी के आंदोलन में हिस्सा लेने के अपराध में आईसीएस के इम्तिहान में बैठने से रोक दिया गया था और जिसकी जेब में पुश्तैनी पैसा-धेला तक नहीं था। माँ, बेचारी, अपनी माँ और गांधी जी के सिद्धांतों के चक्कर में सादा जीवन जीने और उँचे खयाल रखने पर मजबूर हुईं। हाल उनका यह था कि खादी की साड़ी उन्हें इतनी भारी लगती थी कि कमर चनका खा जाती। रात-रात भर जागकर वे उसे पहनने का अभ्यास करतीं, जिससे दिन में शर्मिंदगी न उठानी पड़े। वे कुछ ऐसी नाजुक थीं कि उन्हें देखकर उनकी सास यानी मेरी दादी ने कहा था, 'हमारी बहू तो ऐसी है कि धोई, पोंछी और छींके पर टाँग दी।' गनीमत यही थी कि किसी ने उन्हें छींके पर से उतारने की पेशकश नहीं की।

क्यों नहीं की, उसकी दो वजहें थीं। पहली यही कि हिन्दुस्तान के तमाम वाशिंदों की तरह, उनके ससुरालवाले भी, साहबों से खासे अभिभूत थे और मेरे नाना पक्के साहब माने जाते थे। बस जात से वे हिन्दुस्तानी थे, बाकी चेहरे-मोहरे, रंग-ढंग, पढ़ाई-लिखाई, सबमें अंग्रेज थे। मजे की बात यह थी कि हमारे देश में आजादी की जंग लड़ने वाले ही अंग्रेजों के सबसे बडे प्रशंसक थे, गांधी-नेहरू हों या मेरे पिता जी के घरवाले। भले लड़का, आजादी की लड़ाई लड़ते, जेब खाली और शोहरत सिर करता रहे, दबदबा उसके साहबी ससुर का ही था। एक आन-बान-शान वाले साहब ने उनके सिरफिरे लड़के को अपनी नाजुक जान लड़की सौंपी, उससे रोमांचक क्या कोई परिकथा होती! नानी की सनक भरी आखिरी ख्वाहिश और नाना की रजामंदी, वे रोमांचक उपकथाएँ थीं, जो कहानी के तिलिस्म को और गाढ़ा बना चुकी थीं। दूसरी वजह माँ की अपनी शख्सियत थी। उनमें खूबसूरती, नजाकत, गैर-दुनियादारी के साथ ईमानदारी और निष्पक्षता कुछ इस तरह घुली-मिली थी कि वे परीजात से कम जादुई नहीं मालूम पड़ती थीं। उनसे ठोस काम करवाने की कोई सोच भी नहीं सकता था। हाँ, हर ठोस और हवाई काम के लिए उनकी जबानी राय जरूर माँगी जाती थी और पत्थर की लकीर की तरह निभाई भी जाती थी।

मैंने अपनी दादी को कई बार कहते सुना था, 'हम हाथी पे हल ना जुतवाया करते, हम पे बैल हैं।' बचपन में ही मुझे इस जुमले का भावार्थ समझ में आ गया था, जब देखा था कि, हम बच्चों की ममतालू परवरिश के मामले में माँ के सिवा घर के सभी प्राणी मुस्तैद रहते थे। दादी और उनकी जिठानियाँ ही नहीं, खुद-मर्दजात, पिता जी भी।

पर ठोस काम न करने का यह मतलब नहीं था कि माँ को आजादी का जुनून कम था। वह भरपूर था और अपने तरीके से वे उसे भरपूर निभाती रही थीं। जाहिर है कि जब जुनून आजादी का हो तो, उसे निभाना भी आजादी से चाहिए। जिस-तिस से पूछकर, उसके तरीके से नहीं, खुद अपने तरीके से। हमने अपनी माँ को कभी भारतीय माँ जैसा नहीं पाया। न उन्होंने कभी हमें लाड़ किया, न हमारे लिए खाना पकाया और न अच्छी पत्नी-बहू होने की सीख दी। कुछ अपनी बीमारी के चलते भी, वे घरबार नहीं सँभाल पाती थीं पर उसमें ज्यादा हाथ उनकी अरुचि का था। उनका ज्यादा वक्त किताबें पढ़ने में बीतता था, बाकी वक्त साहित्य-चर्चा में या संगीत सुनने में और वे ये सब बिस्तर पर लेटे-लेटे किया करती थीं। फिर भी, जैसा मैंने पहले कहा था, हमारे परंपरागत दादा-दादी या उनकी ससुराल के अन्य सदस्य उन्हें न नाम धरते थे, न उनसे आम औरत की तरह होने की अपेक्षा रखते थे। उनमें सबकी इतनी श्रद्धा क्यों थी, जबकि वह पत्नी, माँ और बहू के किसी प्रचारित कर्तव्य का पालन नहीं करती थीं? साहबी खानदान के रोब के अलावा मेरी समझ में दो कारण आए हैं-(1) वे कभी झूठ नहीं बोलती थीं और (2) वे एक की गोपनीय बात को दूसरे पर जाहिर नहीं होने देती थीं।

पहले के कारण उन्हें घरवालों का आदर मिला हुआ था दूसरे के कारण बाहरवालों की दोस्ती। दोस्त वे हमारी भी थीं, माँ की भूमिका हमारे पिता बखूबी निभा देते थे। मुझे याद है, बचपन में भी हमारे घर में किसी की चिट्ठी आने पर कोई उससे यह नहीं पूछता था कि उसमें क्या लिखा है। भले वह एक बहन की दूसरी के नाम क्यों न हो। और माँ यह जानने को बेहाल हों कि बीमारी से वह उबरी या नहीं। छोटे से घर में छह बच्चों के साथ, सास-ससुर आदि के रहते हुए भी, हर व्यक्ति को अपना निजत्व बना, रखने की छूट थी। इसी निजत्व बना, रखने की छूट का फायदा उठाकर, हम तीन बहनें और छोटा भाई लेखन के हवाले हो गए।

लीक से खिसके, अपने पूर्वजों में, माँ और नानी ही रही होतीं तो गनीमत रहती, पर अपनी एक परदादी भी थीं, जिन्हें कतार से बाहर चलने का शौक था। उन्होंने व्रत ले रखा था कि अगर खुदा के फज़ल से, उनके पास कभी दो से ज्यादा धोतियाँ हो जाँएगी तो वे तीसरी दान कर देंगी। जैन समाज में अपरिग्रह की सनक बिरादरी बाहर हरकत नहीं मानी जाती, इसलिए वहाँ तक तो ठीक था। पर उनका असली जलवा तब देखने को मिला, जब मेरी माँ पहली बार गर्भवती हुईं। मेरी परदादी ने मंदिर में जाकर मन्नत माँगी कि उनकी पतोहू का पहला बच्चा लड़की हो। यह गैर-रवायती मन्नत माँगकर ही उन्हें चैन नहीं पड़ा। उसे भगवान और अपने बीच पोशीदा रखने के बजाए सरेआम उसका ऐलान कर दिया। लोगों के मुँह खुले-के-खुले रह गए। उनके फितूर की कोई वाजिब वजह ढूँढ़े न मिली। यह भी नहीं कह सकते थे कि खानदान में पुश्तों से कन्या पैदा नहीं हुई थी, इसलिए माँ जी बेचारी कन्यादान के पुण्य के अभाव को पूरा करने के चक्कर में थीं। क्योंकि पिता जी की ही नहीं, दादा जी की भी बहनें मौजूद थीं। हाँ, पहला बच्चा हर बहू का बेटा होता रहा था। खैर, माँ जी ने अपनी तरफ से कोई सफाई नहीं दी, बल्कि बदस्तूर मंदिर जाकर मन्नत दुहराती रहीं। पूरा नुक्कड़ गाँव जानता था कि माँ जी का भगवान के साथ सीधा-सीधा तार जुड़ा हुआ है। बेतार का तार। इधर वह तार खींचती, उधर टन से तथास्तु बजता। मेरी दादी तो पहली मर्तबा में ही तैयार हो गई थीं कि गोद में खेलेगी, तो पोती। पर माँजी की आरजू किस कदर रंग लाएगी, उसका उन्हें भी गुमान न रहा होगा।

लड़की की गैर-वाजिब जुस्तजू सुन, भगवान कुछ ऐसी आफरा-तफरी में आ गए कि एक न दो, पूरी पाँच कन्याँए एक-के-बाद-एक धरती पर उतार दीं। भगवान को क्या कहें, माँ जी के सामने तो नामी चोर भी आफरा-तफरी में आ जाते थे। माँजी और नामी चोर का किस्सा होश सँभालने के बाद मैंने कई बार सुना था, चोर के दीदार की खुशनसीबी भी हाथ आई थी।

हुआ यूँ था कि किसी शादी के सिलसिले में नुक्कड़ की हवेली के तमाम मर्द बारात में दूसरे गाँव गए हुए थे। औरतें सज-धज कर रतजगा मना रही थीं। नाच-गाने और ढोलक की थाप के शोर में नामी चोर कब सेंध लगाकर हवेली में घुसा, किसी को खबर न हुई। पर चोर था बदकिस्मत, जिस कमरे में घुसा, उसमें माँ जी सोई हुई थीं। औरतों के शोर से बचने को, वे अपना कमरा छोड़ दूसरे में जा सोई थीं। चोर बेचारा, तमाम जुगराफिया दिमाग में बिठलाकर उतरा था, उसे क्या पता था कि इतनी बड़ी-बूढ़ी पुरखिन जगह बदल लेगी। खैर, बुढ़ापे की नींद ठहरी, चोर के दबे पाँवों की आहट से ही खुल गई।

'कौन?' माँ जी ने इतमीनान से पूछा।

'जी, मैं', चोर ने युगों से चला आ रहा, पारंपरिक, असंगत जवाब दिया।

'पानी पिला', माँ जी ने कहा।

'जी मैं--- ?' चोर झिझककर रह गया।

तब तक माँ जी बिस्तर के बराबर में टटोलकर देख चुकी थीं, लोटा खाली था।

'ऐसा कर', उन्होंने कहा, 'यह लोटा ले और कुएँ से पानी भर ला। पर देख,

कपड़ा कसकर बाँधे रखियो और तरीके से छानियो।'

चोर घबरा गया, अँधेरे में इन्होंने केसे जाना कि उसके मुँह पर कपड़ा बँधा है और कमर में भाँग। भगवान से उनका तार जुड़े होने की खबर उसे थी। पर बुढ़िया भाँग भी छानती होगी, एकदम यकीन न हुआ। इसी से कुछ हैरान-परेशान हो उठा।

'जल्दी कर भाई', तभी माँ जी ने कहा, 'बड़ी प्यास लगी है।'

'पर मैं तो चोर हूँ', मारे घबराहट और धर्मसंकट के चोर सच कह गया।

'हुआ करे', माँ जी ने कहा, 'प्यासे को पानी तो पिला। पर देख, मेरा धरम न बिगाड़ियो, लोटे के मुँह से कपड़ा न हटाइयो, हाथ रगड़कर धो लीजो और पानी कपड़े से छानकर भरियो।'

'आप चोर के हाथ का पी लोगी?'

'कहा न, रगड़कर धो लीजो, सब नाच-गाने में लगे हैं, तेरे और भगवान के सिवा कौन धरा है, जो पिलाएगा।'

भगवान वहीं-कहीं उसके बराबर में धरे हैं, सुनकर चोर कुछ ऐसा अकबकाया कि लोटा उठाकर चल दिया। पूरी एहतियात के साथ पानी भरकर लौटा तो, पहरेदार ने धर-दबोचा। कुँए पर देख लिया गया था।

तब माँ जी ने लोटे का आधा पानी खुद पीकर, बाकी चोर को पिला दिया और कहा, एक लोटे से पानी पीकर हम माँ-बेटे हुए। अब बेटा, चाहे तो तू चोरी कर, चाहे खेती। बेटा बेचारा किस लायक रह गया होगा। अंश।

सो रोमांचक धंधा छोड़ खेती से लगा। क्रमशः

सालों-साल लगा रहा। जब मैंने उसे देखा तो बड़ा भलामानुस बूढ़ा लगा मुझे, डरा-डरा, हैरान-सा। अब खानदानी विरासत कहिए या जीवाणुओं का प्रकोप, उन दो सनकी बुढ़ियों के बीच मैं अच्छी फँसी! एक तराफ, माँ जी के चलते, अपने लड़की होने पर कोई हीन भावना मन में नहीं उपजी। दूसरी तरफ, नानी के चलते, देश की आजादी को लेकर नाहक रोमानी ही रही।

15 अगस्त 1947 को, जब देश को आजादी मिली या कहना चाहिए, जब आजादी पाने का जश्न मनाया गया तो दुर्योग से मैं बीमार थी। उन दिनों, टाइफाइड खासा जानलेवा रोग माना जाता था। इसलि, मेरे तमाम रोने-धोने के बावजूद डॉक्टर ने मुझे इंडिया गेट जाकर, जश्न में शिरकत करने की इजाजत नहीं दी। चूँकि डॉक्टर अपने नाना के परम मित्र थे, उनसे ज्यादा नाना थे इसलि, हमारे पिता जी, जो बात-बात पर सत्ताधारियों से लड़ते-भिड़ते फिरते थे, चुप्पी साध गए। मैं बदस्तूर रोती-कलपती रही, क्या कोई बच्चा इकलौती गुड़िया के टूट जाने पर रोया होगा! मेरी उम्र तब नौ बरस की थी। इतनी छोटी नहीं कि गुड़िया से बहलती और इतनी बड़ी नहीं कि डॉक्टरी तर्क समझती। तंग आकर पिता जी मुझे 'ब्रदर्स कारामजोव' उपन्यास पकड़ा गए। किताबें पढ़ने का मुझे मिराक था। सो, जब कुछ देर बाद मैंने देखा कि पिता जी को छोड़कर, घर के बाकी सब प्राणी पलायन कर चुके थे और पिता जी दूसरे कमरे में बैठे अपनी किताब पढ़ रहे थे तो, रोना-धोना छोड़कर मैंने भी किताब खोल ली। एक बार शुरू कर लेने पर, उसने मुझे इतनी मोहलत नहीं दी कि दोबारा रोना शुरू करूँ या कोई और काम पकडूँ। उस वक्त 'ब्रदर्स कारामजोव' मुझे देने में क्या तुक थी, तब मेरी समझ में नहीं आया। किताब कितनी समझ में आई, वह अब तक नहीं जानती, क्योंकि उसके बाद इतनी बार पढ़ी कि सारे पाठ आपस में गड्ड-मड्ड हो गए। कितना पहली बार में पल्ले पड़ा, कितना बाद में, कहना मुश्किल है। पर इतना विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि उसका एक अध्याय, जो बच्चों पर होने वाले अनाचार-अत्याचार पर था, मुझे पहली बार में ही लगभग कंठस्थ हो गया था। उम्र के हर पड़ाव पर वह मेरे साथ रहा और मेरे लेखन के एक महत्त्वपूर्ण भाग को प्रभावित करता रहा। जैसे 'जादू का कालीन' मेरा नाटक, 'नहीं' व 'तीन किलो की छोरी', जैसी कहानियाँ व 'कठगुलाब' उपन्यास के कई

श्रमयोग पत्र के 100वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर श्रमयोग पत्र परिवार के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई।

With Best Complements from

LOZICS®
Smart ERP for Logistics
www.lozics.in

efacto®
SCM & Retail Process Automation
www.efacto.in

LOZICS® and eFacto® are registered trademark of
BNG Infotech Private Limited
509-511 Gagandeep Building, Rajendra Place, New Delhi 110008

हमारा स्वास्थ
डिमेंशिया भाग–1

✍डा0 वन्दना, बैगलुरु

डिमेंशिया लक्षणों का एक समूह है और ये सब लक्षण मस्तिष्क की क्षमताओं से सम्बधित हैं। इसे मनोभ्रंश के नाम से भी जाना जाता है। जब हमारा प्रमस्तिष्कीय वल्कुट यानि बमतमइतंस क्षीण होना शुरू होता है तो उसमें अपरिवर्त्य बदलाव होने लगते हैं, उस वजह से उसके कार्य करने की क्षमता में इसका प्रभाव पड़ता है और डिमेंशिया शुरू होता है। यह काफी वर्षो का परिणाम होता है। यह एक दम से होने वाली परेशानी नहीं है। आयु, आनुवांशिक विरासत और परिस्थितियों को शामिल कर संसर्ग कारक इसके लिए जिम्मेदार हैं।

नाड़ी सम्बन्धी डिमेंशिया दिमाग के लिए आपूर्ति करने वाली रक्त नसों को क्षति पहुंचने से होता है। धुम्रपान करने या उच्च रक्तचाप वाले लोगों में, रक्त में चर्बी की बहुत मात्रा होने वाले लोगों में या मधुमेह रोग से ग्रस्त लोगों में नाड़ी संबंधी डिमेंशिया विकसित होने का खतरा होता है।

डिमेंशिया में व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमता– अर्थात सोच, तर्क और याद संबंधी क्षमता में गिरावट होती है। याद्दाशत की समस्या इसका एकमात्र प्रमुख लक्षण नहीं है, इसके अलावा भी इसके अनेक गम्भीर और चिन्ताजनक लक्षण होते है जिसका असर पीड़ित के जीवन के हर पहलू पर होता है।

कई बार व्यक्ति को अपने दैनिक कार्य सम्पन्न करने में भी दिक्कत होता है और यह परेशानियाँ उम्र के साथ बढ़ती जाती है। यह बीमारी 65 वर्ष से अधिक उम्र के दस में से एक को प्रभावित करती है। यह 45 वर्ष या उससे अधिक आयु वाले लोगो को भी प्रभावित कर सकती है।

लक्षण– मनोभ्रंश के लक्षण कई रोगों के कारण पैदा हो सकते हैं। क्योंकि यह मस्तिष्क को हानि करते हैं और हम अपने सभी कार्यों के लिए मस्तिष्क पर निर्भर है। साल दर साल इस रोग से पीड़ित व्यक्ति की स्थिति खराब होती चली जाती है और बाद में साधारण कार्य करने में भी दिक्कत होने लगती है जैसे चल पाना, बात करना, खाना खा लेना, निगलना, चवाना आदि। आरम्भिक लक्षण में सबसे चर्चित है याद्दाशत की समस्या। डिमेंशिया में देखी जाने वाली याद्दाशत की समस्या सामान्य बुढापे की भूलने की समस्याओं से अलग है। डिमेंशिया में समस्या खास तौर पर अल्पकालीन मेमोरी में होती है– यानि की हालिया घटनाएँ या हाल में सीखी हुई चीजे याद रखने में दिक्कत। अन्य लक्षण होते है।

- सोचने में कठिनाई होना।
- छोटी–छोटी समस्याओं को भी न सुलझा पाना जैसे बोलते वक्त सही शब्द न ढूंढ पाना।
- समय और स्थान का सही बोध न होना, परिचित जगहों में खो जाना, दिन है या रात यह न जान पाना। भटक जाना।
- किसी वस्तु या चित्र को देखकर न जान पाना कि वह क्या है।
- नम्बर जोड़ने और घटाने में दिक्कत।
- वस्तुओं को अजीब तरह से इधर–उधर रख देना, जो उसकी जगह नहीं है वहाँ रख देना, जैसे फोन या घड़ी को फ्रिज में रख आना।
- अनुचित अटपटे निर्णय लेना जैसे तपती धूप में स्वैटर पहन लेना।
- डिमेंशिया से ग्रसित लोग अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं कर पाते। उनके मूड और व्यवहार में बदलाव आने लगता है।
- दृष्टि सम्बन्धित समस्याएँ– छवियाँ पहचानने में दिक्कत होना, दूरी और गहराई का अनुमान न लगा पाना, पढ़ने मे दिक्कत होना।

यह जरूरी नहीं कि सारे लक्षण डिमेंशिया से ग्रसित सभी व्यक्तियों में पाए जाए। हर व्यक्ति में सारे लक्षण नहीं पाए जाते है। लक्षण मस्तिष्क की क्षति के कारण होते है। तो इससे हम जान सकते हैं कि किस व्यक्ति में कौन से लक्षण आएगें और कितने गंभीर होंगे यह सब निर्भर होता है कि व्यक्ति के मस्तिष्क में कहाँ और कितनी क्षति है। जैसे कि अल्जाइमर के मरीज। डिमेंशिया में अक्सर शुरू में याददाशत की समस्या होती है पर अन्य डिमेंशिया के प्रकार में आरंभिक लक्षण में फर्क हो सकता है जैसे कि भूलने की समस्या से पहले व्यवहार संबंधी समस्याऐं आ सकती हैं। बोल चाल में दिक्कत हो सकती है आदि।

डिमेंशिया और बुढ़ापे में याददाश्त के लक्षणों में अन्तर।

डिमेंशिया में और सामान्य बुढ़ापे में भूलने की बीमारी में अन्तर है। इन दोनों में अन्तर न कर पाना आम समस्या है। क्योंकि डिमेंशिया के शुरूआती लक्षण सामान्य बुढ़ापे की समस्याओं से मिलते जुलते है। ज्यादातर लक्षण धीरे–धीरे साल दर साल ही बढ़ते है तो ज्यादातर केस में लक्षण इतनी धीमी गति से बढ़ते है कि इनको बुढ़ापे की सामान्य समस्याओं से कनफ्यूज कर लिया जाता है। पर डिमेंशिया उम्र बढ़ने का स्वाभाविक अंग नहीं है। डिमेंशिया के बारे में अच्छे से जानकारी हो तो इसके लक्षणों को जान पाना आसान हो जाता है। वैसे चाहे कोई भी दिक्कत हो जो सामान्य व्यवहार से अलग लगे और व्यक्ति की रोजमर्रा के कार्यों को प्रभावित कर रही हो तब डॉक्टर की सलाह लेना आवश्यक है।

अगले भाग मे हम जानेंगे इसके कारण, प्रकार उपचार आदि।

श्रमयोग पत्र के 100वें अंक
के प्रकाशन के अवसर पर श्रमयोग पत्र परिवार के सभी सदस्यों को
बहुत–बहुत बधाई।

शान्ति हनी बी फार्म
फतेपुरग्रान्ट, हरबर्टपुर
देहरादून, उत्तराखण्ड
फोन: 9412369034
मधुमक्खी पालकों द्वारा उत्पादित शहद

श्रमयोग पत्र के 100वें अंक
के प्रकाशन के अवसर पर श्रमयोग पत्र परिवार के सभी सदस्यों को
बहुत–बहुत बधाई।

माउंट वैली डेवलपमेंट एसोसिएशन
दोणी, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड

श्रमयोग पत्र के 100वें अंक
के प्रकाशन के अवसर पर श्रमयोग पत्र परिवार के सभी सदस्यों को
बहुत–बहुत बधाई।

सोसायटी ऑफपॉल्यूशन एण्ड एनवायरमैण्ट कन्जर्वेशन सांइंटिस्ट्स
देहरादून

श्रमयोग पत्र के 100वें अंक
के प्रकाशन के अवसर पर श्रमयोग पत्र परिवार के सभी सदस्यों को
बहुत–बहुत बधाई।

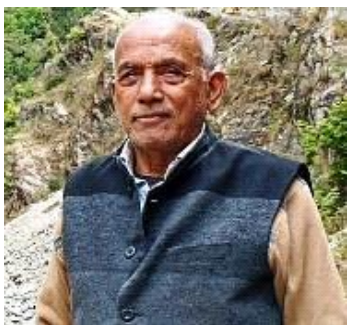

दान सिंह रौतेला
सेवानिवृत प्रधानाचार्य
पर्यटन के लिये खजुरानी, ब्लाक–चौखुटिया (जिला–अल्मोड़ा) पहुँचें।
द्वार–ढाका–भतरोटिया–जानदेधार की साहसिक यात्रा करें।

श्रमयोग पत्र के 100वें अंक
के प्रकाशन के अवसर पर श्रमयोग पत्र परिवार के
सभी सदस्यों को बहुत–बहुत बधाई।
चन्दन सिंह रावत
प्रवक्ता, इतिहास
राजकीय इन्टर कॉलेज, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

रचनात्मक महिला मंच–सल्ट का उपक्रम
सल्ट– अल्मोड़ा एंव नैनीडाडा–पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड के स्वंय सहायता समूह
सदस्यों के द्वारा परम्परागत् तरीके से उगाये गये कृषि उत्पाद

सहयोग
श्रम-उत्पाद SHRAM-UTPAD Promoting rural wisdom
श्रमयोग SHRAMYOG Build harmony between human and nature
सुझाव एंव शिकायतः E-mail : info@shramyog.org, Mobile : 9759131832.

खबरें कार्य क्षेत्र से

श्रमयोग संस्थान सोसायटी पंजीकरण एक्ट के तहत पंजीकृत एक जन संस्थान है। श्रमयोग के द्वारा उत्तराखण्ड राज्य व देश के अलग-अलग हिस्सों में जन समुदायों के साथ मिलकर विकासात्मक गतिविधियों को अन्जाम दिया जाता है। यहाँ श्रमयोग के कार्य क्षेत्र की खबरें दी जा रही है। बच्चे अपने क्षेत्र में बदलते तापमान पर नजर रख रहे हैं। यहां उनकी अभिव्यक्ति को स्थान दिया जा रहा है। - सम्पादक

कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट

झीमार एंव रथखाल क्लस्टर
रेनुका

जून माह में झिमार क्लस्टर की बैठकें तय दिनांक पर की गई, और साथ ही क्लस्टर इकाई का गठन भी किया गया जिसमें देशवाल बाखली, झिमार, धतूरीखत्ता, और मल्ला बिरलगांव के समूहों की महिलाओं ने प्रतिभाग किया। बैठक में सदस्याओं को इकाई गठन का उद्देश्य भी बताया गया। बैठक में सभी ने अपने बातों को रखा और पदाधिकारी का चुनाव किया। जिसमें अध्यक्षा श्रीमती जानकी देवी सचिव भवानी देवी तथा कार्यकारणी में देवकी देवी, सरोज भट्ट एंव भगवती देवी को चुना गया।

जून माह में बैठकों में एक बार फिर से पौष्टिक आहार पर बात की गई, और पौष्टिक आहार यानि मोटा अनाज के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया गया, साथ ही बताया गया की मोटा अनाज हमारे शरीर के लिए कितना महत्वपूर्ण है, जो हमारे शरीर को कई बीमारियों से बचा सकता है। स्वास्थ्य को लेकर बैठकों में हमेशा चर्चाएं होती रहती हैं। सदस्याओं को बताया गया कि आपका श्रम-बाजार फिर से शुरू हो गया है, जिसमें आपको आपकी जरूरतों का सामान उचित मूल्य में उच्च गुणवक्ता का मिलेगा। जो आपको अपने क्लस्टर ऑफिस में, या फिर श्रमसखी, श्रमयोग टीम के माध्यम से गांव में सामान उपलब्ध होगा। यह जान कर सदस्याएं खुश थी कि अब हमारे मंच का अपना बाजार है। जिसमें हमें हमारी मांगो के अनुसार सामान उचित दाम में मिलेगा। श्रम-बाजार के लिए महिलाएं बहुत उत्सुकत हैं, वे अपनी आवश्यकता के अनुसार अन्य सामानों की मांग भी कर रही हैं।

रथखाल क्लस्टर के गाँवों में शुभ कार्यों के चलते बैठकों में अनिमियतता हुई लेकिन श्रमसखी ने अपने आस-पास की बैठकें आयाजित की। बैठक में श्रम-बाजार की जानकारी भी दी। सदस्याओं ने कहा कि हमें यह जानकर खुशी हुई की अब हमारा अपना श्रम बाजार फिर से शुरू हो गया, जिसमें हमें अच्छी गुणवाक्ता का सामान मिलेगा। हमें बाजारों में उचित मूल्य पर अच्छी गुणवाक्ता का सामान नहीं मिल पाता जिस कारण हमारे स्वास्थ पर बुरा असर पड़ता है, और हम कम उम्र में ही कई बीमारियों का शिकार हो जाते हैं। सदस्याओं को बताया गया की अब बच्चों एवं महिलाओ के अलावा श्रमयोग गाँव की किशोरियों के साथ भी काम करना चाहता है, सभी लोग इस बात से सहमत थे कि हम भी यही चाहते हैं कि हमारी किशोरियों के साथ भी संवाद हो, उनका भी अपना संगठन हो। उनकी भविष्य की राह भी थोडा आसान हो, और वो भी और जागरूक रहें। क्लस्टर इकाई बैठक की जानकारी सभी बैठको में दी गई कि जुलाई माह के प्रथम सप्ताह में आपके क्लस्टर इकाई का गठन किया जायेगा, जिसमें मंशुबाखली, हितसिमलि, छिड़गा, पुरियाचौडा एवं सकनणां शामिल रहेंगे।

चाँच एवं झीपा क्लस्टर
राकेश

जून माह में अधिकतर समूहों की बैठकें आयोजित की गई, तथा कुछ की विवाह एंव अन्य कार्यों के चलते नहीं हो पाई, किंतु महिलाओं से लगातार फोन के माध्यम से संपर्क किया गया। 2 तारीख को पहली बैठक पल्ली गांव में आयोजित की गई, जिसमें इस बार महिलाओं ने पानी की समस्या को लेकर बातचीत की, उनका कहना था कि हमारे गांव में आजकल पानी नहीं आ रहा है जिससे हमें दिक्कतों का सामना करना पड़ा रहा है, हमारे गांव में एकमात्र हैंडपंप है वह भी गांव से 600 मीटर की दूरी पर है। महिलाओं को पानी की स्वच्छता का विषेष ध्यान रखने के लिए कहा गया। 5 तारीख को इजराल चांच में विश्व पर्यावरण दिवस के अंतर्गत नौले धारों की सफाई की गई, प्लास्टिक कूड़े को एकत्र कर गड्ढे में डाला गया, तथा साथ-साथ इस बात पर जोर दिया गया कि किसी भी प्लास्टिक कूड़े को नौले या धारे के आस-पास नहीं डाला जाएगा और जिसे भी नौले के आस-पास प्लास्टिक कूड़ा नजर आये वह उसे गड्ढे में डालेगा। महिलाओं को यह बताया गया कि नौले या धारे पर कपड़े धोना ठीक नहीं है, इसके लिए कुछ और प्रबंधन करना पड़ेगा, जहां पर कपड़े धोये जा सकें, क्योंकि साबुन और वॉशिंग पाउडर से पीने का पानी दूषित होता है। पर्यावरण दिवस पर आयोजित किए गए इस कार्यक्रम में महिलाओं के साथ-साथ बाल मंच के बच्चों ने भी भाग लिया। 6 को झीपा में बैठक की गई, जिसमें महिलाओं ने खराब होती रोड़ के विषय में चर्चा करते हुए यह अनुरोध किया कि इसके लिए भी तहसील में ज्ञापन देने की आवश्यकता है, और अगर उससे काम न बने तो आंदोलन किया जाना चाहिए। शाम को नैकड़ा में बैठक की गई जिसमें पिछले माह महिलाओं का वजन नापा गया था इस माह महिलाओं को बी.एम.आई के विषय में जानकारी दी गयी। 7 तारीख को कफल्टा में बैठक आयोजित की गई कफल्टा में प्रारंभिका की गई जिसमें महिलाओं को श्रमयोग की विचारधारा एवं रचनात्मक महिला मंच के स्वरूप के विषय में बताया गया। महिलाओं ने कहा कि हमारे गांव में गैस की गाड़ी ना आने के कारण हमें दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है, जिसके लिए जल्द ही समूह गैस एजेंसी के लिए पत्र लिखेगा। 8 तारीख को बिचला चांच में बैठक आयोजित की गई, जिसमें मुख्य विषय पानी की समस्या को लेकर था, ग्रामीणों का कहना था कि आजकल शहरों से लोग छुट्टियां मनाने गांव आए हैं, जिसके कारण गांव के पानी पर अधिक दबाव पड़ रहा है, और लोगों को सही से पानी नहीं मिल पा रहा। कुछ परिवार ऐसे हैं जिन्हें पानी अधिक मिल रहा है, कुछ परिवार ऐसे हैं जैसे पीने तक का पानी नहीं मिल पा रहा। बैठक में बताया गया की यह प्रबंधन की कमी है, तथ महिलाओं को समझाया गया कि किस प्रकार हम पानी का अच्छे से प्रबंधन कर सकते हैं। इसके लिए एक खुली बैठक आयोजित करने का प्रस्ताव रखा गया जिसमें पानी के आवंटन को लेकर बात करने की बात कही गयी। साथ-साथ ग्राम प्रधान से बात की गयी। ग्राम प्रधान जी ने उचित कार्यवाही करने का आसवासन दिया।

12 तारीख को कालीगाड़ तथा 14 तारीख को बिरलगांव तल्ला में बैठक आयोजित की गई। 15 तारीख को समूह के सदस्य वन्यजीव मानव संघर्ष के तहत पिछले माह दिये गये ज्ञापन पर सरकार से जवाब पूछने गये। क्योंकि महिलाओं ने इसके लिए एक माह का समय सरकार को दिया था, किंतु सरकार की तरफ से कोई भी सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आई। ऐसा लग रहा है, जैसे सरकार को इस मुद्दे से कोई लेना देना नहीं है। तहसील पहुँच कर महिलाओं ने एक सभा आयोजित की जिसमें चर्चाएं की गयी की अब आगें क्या करना है। जिसके बाद फिर से ज्ञापन सौंपा गया। 23 को कालीगाड़ में किशोरी संगठन की बैठक की गयी जिसमें किशोरीयों के साथ अनेक विषयों पर चर्चा की गयी। 24 तारीख को इजराल चांच में बाल मंचों के लिए दो दिवसीय समर कैंप का आयोजन किया गया, इस कैंप में कई सारी एक्टिविटी के जरिए बच्चों को नई-नई चीजें सिखाई गई, बच्चों को इस कैंप में काफी अच्छा लग रहा था। बच्चों ने कहा कि अगर समर कैंप इसी तरह हर वर्ष आयोजित होते रहें तो बहुत अच्छा रहेगा।

सभी गांव में पानी की बड़ी समस्या हो रही है, कई समय से बारिश ना होने के कारण मिर्च की फसल पर अच्छा-खासा प्रभाव पड़ रहा है। अधिकतर लोगों की मिर्च सूख चुकी हैं जिससे किसान खासा परेशान है, स्रोतों और धारों का पानी भी बहुत हद तक कम हुआ है, पीने के पानी के लिए भी लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। जहां पर पानी उपलब्ध है वहां पर लोग मिर्ची की फसल को घर से डिब्बों में पानी ले जा कर दे रहे हैं, जिससे कि कम से कम मिर्ची की फसल बची रहें और मिर्च अपने खाने लायक तब भी हो जाए। अभी तक खेतों से हरी सब्जियां मिलनी शुरू हो जाती थी, किंतु बारिश न होने के कारण हरी सब्जी भी उपलब्ध नहीं हो पा रही, जिससे ग्रामीणों को बाजार पर आश्रित होना पड़ रहा है, बाजारों में भी सब्जीयों ने नाम पर लूट मची है, लोग कई दिन की बासी सब्जीयां खाने को मजबूर हैं। वन्यजीव मानव संघर्ष के अंतर्गत जंगली जानवरों एवं इंसानों के बीच संघर्ष लगातार बढ़ रहा है, बाध रोज घरों तक आ रहा है, बंदरों, काकड ने मिर्च की फसल को बहुत नुकसान पहुँचाया है, सिलाई केन्द्र का दूसरा माह चल रहा है। किशोरियां एंव महिलाएं प्रशिक्षण ले रहीं हैं।

थला-जमरिया कलस्टर
सुरेन्द्र सिंह

जून माह में थला व जमरिया कलस्टर के समूहों की बैठक की गई, बैठकों में श्रम सखियां व समूह की महिलाओं ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया। महिलाओं की रूचि देखकर लगता है कि महिलाओं के लिए केवल अपनी समूह की बैठक ही ऐसा मंच है जिसमें वो सभी लोग सम्मान व बराबरी के साथ सामूहिक फैसले लेने के लिए प्रतिभाग करती हैं। जून माह में कलस्टर के सभी समूह ने मिलकर फैसला लिया कि क्लस्टर की मजबूती व रचनात्मक महिला मंच की मजबूती के लिए कलस्टर इकाई का गठन किया जाए, जिस इकाई में अधिक से अधिक प्रतिभाग करने के अवसर व अपने अधिकारों के लिए संघर्ष नीति बनाई जा सके। सल्ट क्षेत्र में बढ़ते मानव वन्यजीव संघर्ष को लेकर मंच ने 15 जून को दोबारा मुख्यमंत्री को अपने 5 सूत्रीय मांग पत्र दिया। यह भी कहा कि सरकार को हमारी यह मांगे माननी होंगी। यदि नहीं मानी गई तो अगला कदम आंदोलन होगा। बैठकों में स्वास्थ के प्रति जागरूकता पैदा करते हुए महिला मंच ने अपना श्रम बाजार की दुकान खोलने का निर्णय लिया, जिसका उद्देश्य उचित दाम के साथ गुणवत्ता युक्त समान उपलब्ध कराना है। जो हर तरह के शोषण के खिलाफ है। सामुदायिक पत्रकारिता को मजबूत करते हुए श्रमयोग पत्र का सदस्यता अभियान निरंतर चलाया जा रहा है।

घचकोट क्लस्टर
विजय

जून माह में घचकोट क्लस्टर की बैठकों का आयोजन तय तिथियों पर किया गया। बैठकों में इस बार श्रम बाजार, श्रम उत्पाद, रचनात्मक महिला मंच द्वारा मानव वन्यजीव संघर्ष के लिए जागरुकता जत्था, ज्ञापन, के मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठकों का आयोजन हर माह की तरह समूह की अध्यक्षा द्वारा किया गया। मंच द्वारा मानव वन्यजीव संघर्ष के लिए विगत 2 माह में जो भी प्रयास किए जा रहे हैं, समूह की अध्यक्ष द्वारा बैठक में साझा किया गया गया। मंच द्वारा उठाए गए पांच मांगों को समूह के बीच रखा।

शोषण विहीन समाज के लिए मंच द्वारा श्रम बाजार को शुरू किया है, जिसका उद्देश घरेलू उपयोग मे होने वाले खाने का सामान गुणवत्ता के साथ उचित मूल्य पर मंच के सदस्यों को उपलब्ध कराना है। क्षेत्रीय मुद्दों के लिए रचनात्मक महिला मंच हमेशा से सक्रीय रहा है। जिसमें मैठानी समूह के सदस्याओं ने गैस की गाड़ी मैठानी तक नहीं आने से आस-पास के लोगो को बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। जिसमें समूह ने विभाग को पत्र लिख कर इस मामले पर कार्यवाही करने लिए लिया कहा है। रचनात्मक महिला मंच की त्रैमासिक बैठकों को और प्रभावशाली बनाने के लिए और संगठन को मजबूत करने के लिए महिला मंच ने क्लस्टर स्तर पर क्लस्टर इकाई के चुनाव का निर्णय लिया है। इस क्रम में क्लस्टर स्तर पर गठित स्वयं सहायता समूहों ने बैठक कर अपने ही बीच से एक अध्यक्ष, सचिव, और कार्यकारणी सदस्यों का चुनाव किया।

नैनीडांडा क्लस्टर
आसना श्रमयोग

जून माह में नैनीडांडा क्लस्टर में महिला संगठनों की मासिक बैठके आयोजित की गई। जिसमें सदस्यों से जनपक्षीय मुद्दों के लिए संघर्ष करना जरूरी है इस पर चर्चा हुई। रचनात्मक महिला मंच सल्ट की बहनें बढते मानव-वन्यजीव संघर्ष को देखते हुवे अपनी पांच मांगों को लेकर आन्दोलन कर रही हैं, इस की सूचना सदस्याओं को दी गई। सतखोलू गाँव की सदस्याओं ने बताया कि आजकल गाँव में गाय में होने वाली बीमारी (लम्पी वायरस) फैल रहा है। उनके शरीर में दाने निकल आए हैं, ऐसे में सदस्यों से पूछा कि क्या आपने इस विषय में पशु डॉक्टर से सलाह ली या पशु विभाग में पता किया तो सदस्यों ने ना में जवाब दिया। अगले दिन ग्राम प्रधान से नंबर लेकर पशु विभाग के डॉक्टर से बात की गई। इस गाँव की ग्राम प्रधान समूह की सचिव ही हैं, उन्होंने भी पशु विभाग को कॉल किया। डॉक्टर गाँव में आये, उन्होंने गायों को देखा और इंजेक्शन भी लगाया। पशु विभाग के डॉक्टर से कैंप लगाने की बात भी कही गयी, डॉक्टर ने कहा मैं आपको बताता हूँ कि कैम्प कब लग सकता है।

अगले दिन बैठक औलेथ गाँव में आयोजित की जानी थी, बैठक के दौरान दोनों समूहों की सदस्याओं ने गाँव आ रही दो समस्याओं को सबके सामने रखा। पहली पानी की समस्या और दूसरी बकरीयों में होने वाली बीमारी, जिसके कारण एक सदस्या की आठ तो दूसरी सदस्या की ग्यारह बकरियाँ एक साथ मर गई और उन्हें भारी नुकसान झेलना पड़ा। दोनों महिलाएं समूह की सदस्या हैं, इस मुद्दे को समझते हुए पशुपालन विभाग से बात करने की बात की गयी और साथ-साथ मवेशियों का बीमा करवाने के लिए महिलाओं को प्रेरित किया गया। इसी प्रकार औलेथ, ब्यूरा, कलिंकाखाल के गाँव में भी पानी की बड़ी समस्या हो रही है, गाँव में शहरों से लोग आये हैं इसलिए पानी अधिक ही चाहिए। इस वजह से सारे बच्चे और महिलाएँ धारे से पानी ला रहे हैं, गर्मी की वजह से धारे में पानी कम हो गया है। ग्रामीण ने अगर इन सब संसाधनों पर ध्यान नहीं दिया तो पानी का संकट और अधिक बढ़ सकता है। जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा चक्र तो प्रभावित हुआ ही है, इस वजह से नौले धारों में पानी जल्दी ही कम हो जाता है।

सदस्याओं को श्रम बाजार के बारे में बताया कि वह पुन: प्रारंभ होने वाला है, आपके यहां जल्द ही समान लाया जाएगा। 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के दिन समूह की सदस्याओं ने कूड़े को लेकर लोगों को जागरूक किया, ब्यूरा गाँव की सदस्याओं ने कूड़े के गड्ढे भी कियें और अपनी बाखली के लोगों को कूड़ा उसी में डालने के लिए प्रेरित किया। ओलेथ गाँव की सदस्याओं ने रास्तों की सफाई की।

चाँच धारा विकास कार्यक्रम

25 जून, 2023

स्रोत का नाम	पी0एच0			टी0डी0एस0		
	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग
डौंठा पानी नौला	6.4	6.4	6.4	23	23	23
धारा पानी	7.1	7.1	7.1	40	40	40
शिव मन्दिर नौला	7.2	7.2	7.2	38	38	38
हैंड पंप नौला	6.4	6.4	6.4	39	39	39

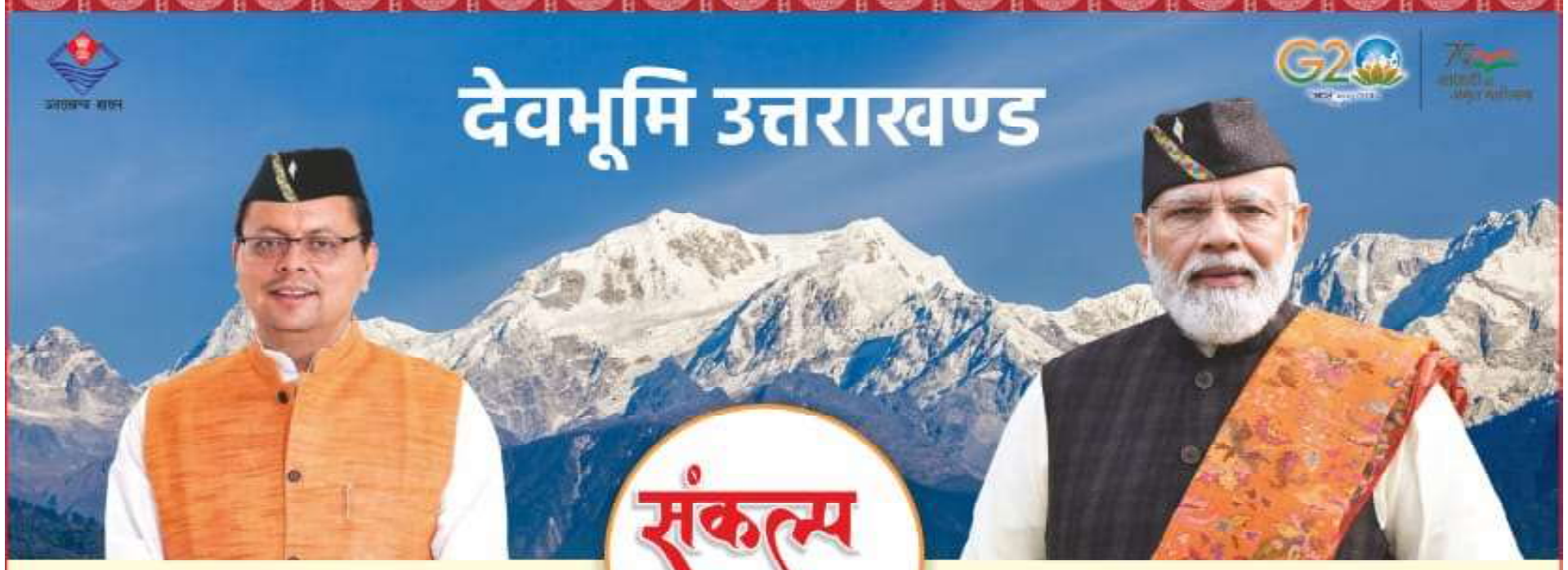

संकल्प नये उत्तराखण्ड का

उत्तराखण्ड को महत्व देने के लिए प्रधानमंत्री जी का धन्यवाद। हम निश्चित रूप से मोदी जी की आकांक्षाओं का उत्तराखण्ड बनाएंगे। प्रदेश के लिए उनका योगदान वृहद है। उत्तराखण्ड से उनका रिश्ता मर्म एवं कर्म का है। प्रधानमंत्री मोदी के मार्गदर्शन में प्रदेश नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ रहा है।

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड आज जिस तरह से कानून व्यवस्था को सर्वोपरि रखते हुए विकास के अभियान को आगे बढ़ा रहा है, वो बहुत सराहनीय है। ये इस देवभूमि की पहचान को संरक्षित करने के लिए भी अहम है। और मेरा विश्वास है कि देवभूमि आने वाले समय में पूरे विश्व की आध्यात्मिक चेतना के आकर्षण का केंद्र बनेगी। हमें इस सामर्थ्य के अनुरुप भी उत्तराखण्ड का विकास करना होगा।

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

विकास के नवरत्न

1 केदारनाथ-बद्रीनाथ धाम में 1300 करोड़ रुपए से पुनर्निर्माण का कार्य।

2 गौरीकुण्ड-केदारनाथ, गोविंदघाट-हेमकुंड साहिब रोपवे।

3 मानसखण्ड मंदिर माला मिशन।

4 4000 से अधिक होम स्टे विकसित।

5 16 ईको टूरिज्म डेस्टिनेशन का विकास।

6 AIIMS, ऋषिकेश का उधमसिंहनगर में सैटेलाइट सेंटर।

7 2 हजार करोड़ रुपए की लागत से टिहरी लेक डेवलेपमेंट।

8 एडवेंचर टूरिज्म व योग का केन्द्र बना उत्तराखण्ड।

9 टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन का विकास।

- चारधाम ऑल वेदर रोड
- दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस वे
- वन्देभारत एक्सप्रेस ट्रेन
- पर्वतमाला परियोजना से प्रदेश में रोपवे कनेक्टिविटी
- ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना
- पर्यटन हब, एडवेंचर टूरिज्म, फिल्म शूटिंग डेस्टिनेशन के रुप में उभरता उत्तराखण्ड
- भारतमाला परियोजना
- एक जिला-दो उत्पाद योजना
- निवेश अनुकूल औद्योगिक नीति
- स्टार्टअप से युवा उद्यमिता को प्रोत्साहन
- अटल आयुष्मान उत्तराखण्ड योजना
- स्टेट मिलेट मिशन से राज्य में पौष्टिक अनाज को बढ़ावा

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी www.uttarainformation.gov.in | DIPR_UK | UttarakhandDIPR | UttarakhandDIPR

बाल मंच का पृष्ठ

इस पृष्ठ में श्रमयोग के ``प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान'' से निकली जानकारियों के साथ-साथ बाल मंच की गतिविधियों एवं बाल मंच के सदस्यों की अभिव्यक्तियों को स्थान दिया जाता है। एवं बच्चों से सम्बन्धित लेखन को स्थान दिया जाता है।

-सम्पादक

मानव सभ्यता पर जलवायु परिवर्तन का संकट

✍शंकर दत्त

जलवायु परिवर्तन एक जटिल प्रक्रिया है, यह करोड़ों वर्षों से अलग-अलग कारणों से हो रहा है। पृथ्वी में जलवायु परिवर्तन के कारण अनेक प्राकृतिक विविधता आई हैं, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में मानवीय गतिविधियों ने वैश्विक रूप से पूरे जलवायु परिवर्तन प्रणाली को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। जिसके कारण मनुष्य सहित सभी पेड़-पौधे जीव जंतु प्रभावित हो रहे हैं। अगर हम पृथ्वी के इतिहास को समझे तो आज हम जो पृथ्वी देख रहे हैं, यह कभी पूरी बर्फ से ढकी थी, जिसे हम हिम युग नाम से भी जानते हैं, वैज्ञानिकों ने यह प्रमाणित किया है कि पृथ्वी के सूर्य का चक्कर लगाने वाली कक्षा में थोड़ा परिवर्तन से हिम युग के अंत की शुरुआत हुई। हिम युग के बाद लगभग 12000 साल पहले होलीसीन युग प्रारंभ हुआ था। यह समय हिम युग से अपेक्षाकृत गर्म युग था, जिसने मानव सभ्यता को विकसित और फलने फूलने का मौका दिया। लेकिन इस दौरान भी प्राकृतिक जलवायु परिवर्तन विविधताएं जैसे ज्वालामुखी विस्फोट और सौर गतिविधियां होती रही, जो जलवायु को प्रभावित करती रही।

इसके बाद ग्लेशियर युग आया, जिस दौरान खूब सर्दियां हुई और जनसंख्या का विस्थापन हुआ। 16 वीं सदी में औद्योगिक क्रांति के चलते मानव जनित जलवायु परिवर्तन की शुरुआत हुई जो अब तक के जलवायु परिवर्तन में सबसे ज्यादा तेज एवं नकारात्मक था। कोयला, तेल और गैस के जलने से वायुमंडल में अनियंत्रित रूप से सीओ 2 गैस जा मिली जिसने मौसम चक्र को प्रभावित किया। परिणाम स्वरूप बीसवीं सदी के ग्लोबल वार्मिंग के स्पष्ट प्रमाण देखे गए, जिसने पूरे पर्यावरण चक्र को बदल के रख दिया, प्रमाण दिखाते हैं कि यह मानव सभ्यता के अंत के चिन्ह हैं।

जिस तेजी से जलवायु में परिवर्तन हो रहे हैं, वह दिन दूर नहीं जब धरती पर मनुष्य का अस्तित्व ही नही रहेगा। बाढ़, तूफान, लू और सूखे के चरम घटनाओं ने हमें ये संकेत दे दिए हैं कि हम गलतियां कर रहे हैं। हमने जलवायु परिवर्तन को लेकर कुछ कदम जरूर उठाए हैं किंतु ये बहुत कम और अप्रभावी हैं। 5 जून 1972 को स्वीडन के स्टॉकहोम में एक सम्मेलन किया गया, इसका उद्देश्य मानव स्वास्थ्य को प्रदूषण से बचाने के लिए एक वैज्ञानिक संधि है, इसके वर्षगांठ के रूप में हर साल 5 जून को हम पर्यावरण दिवस मनाते हैं। 1972 में समुद्र के पर्यावरण की रक्षा के लिए फिन्लेण्ड के हेलसिटी में एक सम्मेलन हुआ, उसके बाद समुद्री कचरे को खत्म करने के लिए 1975 के लंदन में एक वैश्विक समझौता हुआ। 1985 और 1988 में वियना सम्मेलन हुआ, जिसमें ओजोन परत के संरक्षण हेतु बहुपक्षीय पर्यावरण समझाते हुए। 1992 के ब्राजील के रियो शहर में पृथ्वी सम्मेलन हुआ जिसमें 182 देशों ने भाग लिया था, यह सम्मेलन दुनिया भर के पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्थन प्रदर्शित करने के लिए था।

11 दिसंबर 1997 को क्योटो प्रोटोकॉल को अपनाया गया, यह एक महत्वपूर्ण संधि है, इस संधि के तहत जलवायु परिवर्तन के कारक गैसों के उत्सर्जन में कटौती करना था। इसके बाद भी बहुत सारे अंतरराष्ट्रीय संधियां हुई हैं किंतु पूर्ण रूप से कोई भी देश जलवायु परिवर्तन के लिए जरूरी कदम उठाने को तैयार नहीं है। अब स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि, बिना अंतरराष्ट्रीय समझौतों के सही क्रियान्वयन के जलवायु परिवर्तन को रोकना असंभव है या यूं कहे मानव सभ्यता को बचाना संभव नहीं है।

समर कैंप में दोस्तों के संग मौज मस्ती

समर कैंम्प में प्रतिभाग करते बच्चे।

बाल मंच के बच्चों की गर्मीयों के महीने में स्कूल से छुट्टियाँ हो जाती हैं। एक माह तक कुछ बच्चें घूमने निकल जाते हैं तो कुछ गाँव में ही रह कर कुछ न कुछ करते रहते हैं। जो बच्चें घर में हैं उनके साथ समर कैंप आयोजित किये गये।

पहला समर कैंप 20 और 21 जून को थला क्लस्टर में और दूसरा 24-25 जून को चांच क्लस्टर में आयोजित किया गया। बच्चों को सामाजिक पूजी, संगठन का महत्व बताते हुए शिवर की शुरुआत हुई। बच्चों के साथ बहुत सी मनोरंजक एवम ज्ञानवर्धक गतिविधियां हुई। जिसमें बच्चों ने बड़ी उत्सुकता के साथ प्रतिभाग किया। शिविर में बच्चों ने अपने को प्रेजेंट करना सीखा। शुरुआत में बच्चे शर्मा रहे थे, पर दूसरे दिन सभी बच्चें खूब बातें करने लगें। शिवर में बच्चो ने बहुत से खेल खेले जिसमें उनका बौद्धिक स्तर बढे, बच्चों को संगठन में एक साथ काम करने का महत्व बताते हुए, गुब्बारे के माध्यम से खेल खिलाए गये। लीडर की क्या भूमिका होती है और ओबजरवेशान क्यों जरूरी है, हमें अपने आसपास की चीजों को देखना और समझना चाहिए इस पर भी बात की।

इजराल चांच में बच्चों को तापमापी और वर्षामापी यंत्र भी दिखाया और किस तरह से डाटा लेते हैं बच्चों को सीखया गया, बच्चों का मानना था कि वर्षा को नापा नहीं जा सकता। जब उन्हें वर्षामापी यंत्र दिखाया तो वो बहुत ही ज्यादा उत्सुक हुवे। बच्चों ने कैंप में बहुत सी अपने पसंद की गतिविधि भी की। कैंप में दूसरे दिन बताया गया कि जो वेस्ट बोतल होती हैं उसका प्रयोग हम किस-किस तरह से कर सकते हैं। इस पर भी बच्चों के साथ एक गतिविधि हुई। जिसमें बच्चो ने बोतल को काट कर उसमें कलर किया और अब उसमें वो फूल का पौधा लगाएंगे। बच्चों ने पर्यावरण और प्रकृति से जुड़े हुए चार्ट भी तैयार किये। चार्ट बनाने के लिए बच्चों को कुछ विषय दिये गये थे जिस के बारे में स्वयं ही बच्चों ने कल्पना कर के चार्ट तैयार करे। ये सब गतिविधि बच्चो को बहुत पसंद आई।

अमन बाल मंच की बैठक

प्राकृतिक धरोहर बचाओं अभियान के अर्न्तगत 2 और 5 जून को भवाली गाँव में गठित अमन बाल मंच के साथ बैठक आयोजित की गई। 2 जून की बैठक में संगठन का महत्व और 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस के विषय में बच्चो के साथ विस्तार से चर्चा हुई। उसके बाद बच्चों ने कूडे के प्रबन्धन से सम्बन्धित विडियो भी देखी। इस बैठक में बच्चों को यह बताया गया कि किस तरह कूड़ा प्रकृति को नुकसान पहुंचा रहा है।

हरबेरियम बनाते बाल मंच के सदस्य।

5 जून विश्व पर्यवरण दिवस के दिन आयोजित हुई बैठक में 'अपने आस- पास को जाने' कार्यक्रम के तहत बच्चों ने गाँव में उनके आस-पास होने वाली जड़ी बूटी, फल, वर्तमान में हो रहे अनाज और सब्जियों के पत्तों को एकत्रित कर के हरबेलियम चार्ट बनाया। बच्चों ने हरबेलियम चार्ट बनाने के लिए अपने परिवार के बड़े लोगो से बात की और उनके साथ जा कर पत्तों को एकत्रित किया।

समर कैंम्प में बच्चों के अनुभव

हमें दो दिन पहले ही बता दिया गया था की, ग्राम सभा थला मनराल के विद्यालय में ग्रीष्म कालीन शिविर लगाया जाएगा जो कि 2 दिन का होगा 21 तथा 22 जून को। जिसमें थला क्लस्टर के सभी बच्चे उपस्थित थे। प्रथम दिवस में थला मनराल व तड़ियाल ग्राम सभा से 4 बच्चे तथा जमोली से 5 बच्चे और नदोली से 11 बच्चे थे हम कुल 20 बच्चे थे, शिविर में हमारी एक साथी और थीं आसना दीदी, पहले ही दिन हमें देर हो गई। शुरूआत में हमने एक गेम खेला जो हमें बहुत अच्छा लगा, जिसमें बच्चे एक गोले में बैठते हैं, और उसमें हमारे पास एक बोतल थी तथा उसमें एक दूसरे को बोतल पास करना था, जिस किसी के पास भी बोतल होती तथा गाना रुक जाता तो उसे कोई एक्टिविटी करनी पड़ती थी। कुछ हमने ऑब्जरवेशन पावर वाले गेम्स भी खेले और अंत में हम सभी बच्चों ने गाना गाया। उसके बाद हमें एक-एक पैकेट बिस्किट का भी मिला। अगले दिन हम ठीक समय पर पहुंच गए थे पर आसना दीदी थोड़ा सा देर में पहुंची, दूसरे दिन आसना दीदी के साथ विक्रम भैया भी आए थे, उस दिन भी हम 17 या 18 बच्चे आए थे, हमने पहले बोतल की कटिंग की और उस पर कई सारे रंग किए, फिर हमने ऑब्जरवेशन पावर वाले गेम्स खेलें और अंत में हमारे चार ग्रुप बनाए गए और हमें एक एक चार्ट दे दिया गया था। उसमें हमारा टॉपिक खत्म होते पहाड़ तथा जल स्रोत था हमारा ग्रुप 1 था हमें बहुत अच्छा लगा।

विकास रावत, बाल मंच, थला मनराल

समर कैंप हर बार जून के महीने में मनाया जाता है, इस बार हम सभी बच्चों का समर कैंप 2 दिनों के लिए हुआ था जिसमें बच्चे नई नई चीजें सीखते हैं। समर कैंप का आयोजन थला गांव के हाई स्कूल में किया गया था समर कैंप के लिए 5 बातें फायदेमंद है

1.समर कैंप में कई तरह की एक्टिविटीज होती हैं, जिसमें बच्चों का टैलेंट सामने आता है। 2. समर कैंप में दोस्तों के संग मौज मस्ती करने का मौका मिलता है। 3. खेल खेल में बच्चे नई नई चीजें सीखते हैं। 4. क्यारी सजाने की एक्टिविटी से बच्चों में पर्यावरण को हरा-भरा रखने की समझ पैदा होती है। 5. समर कैंप मैं सबसे ज्यादा मजेदार पूल पार्टी होती है इसमें मौज मस्ती के साथ-साथ स्वच्छता का भी ज्ञान मिलता है, समर कैंप उन बच्चों के लिए अच्छा होता है जो बच्चे स्कूल जाने में हिचकिचाते हैं

मयंक रावत, बाल मंच, थला मनराल

बाल मंच के पर्यावरण चेतना केन्द्रों की रिपोर्ट

दिनाँक	प्रात: 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)				सांय 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)			
	गिगड़े सल्ट	औलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट	गिगड़े सल्ट	औलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट
1 जून	24	33	19	28	26	34	20	30
2 जून	24	32.5	20	28	27	33	21	30
3 जून	25	33	19	28	27	34	18	31
4 जून	26	33.5	20	28	27	35	22	31
5 जून	27	34	20	28	28	35.5	21	32
6 जून	27	33.5	19	28	28	35	20	30
7 जून	26	34	20	28	28	35	21	32
8 जून	27	34	21	29	28	34.5	22	33
9 जून	27	33	19	30	28	34	20	33
10 जून	28	34.5	19	31	28	35	21	34
11 जून	28	34	20	31	31	34	18	35
12 जून	28	34.5	21	32	31	36	20	35
13 जून	28	34	20	32	31	35	22	35.5
14 जून	28	35	21	32	31	36	22	35.5
15 जून	29	35.	20	32	31	37	23	35.5
16 जून	29	36	21	32	31	35.5	22	35.5
17 जून	30	35	20	32	31	36	21	35
18 जून	30	34.5	21	31	31	35	22	35
19 जून	30	35	20	31	31	34	21	33
20 जून	29	34.5	20	30.5	28	34	20	32
21 जून	29	35	21	30	29	33.5	22	33
22 जून	29	34	20	31.5	29	33	22	32.5
23 जून	29	32	20	31.5	28	31	21	32.5
24 जून	28	31	21	-	28	29	20	-
25 जून	28	30	21	-	29	29	23	-

वर्षा (मीमी)

बल्यूली (सल्ट)				
6 जून	8		18 जून	.5

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक शंकर दत्त ने नौटियाल प्रिंटर्स ग्राम माजरी माफी, मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से मुद्रित कर ग्राम श्यामपुर, पो0 अम्बीवाला, प्रेमनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।

सम्पादक-अजय कुमार

सभी पद अवैतनिक हैं।

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा)